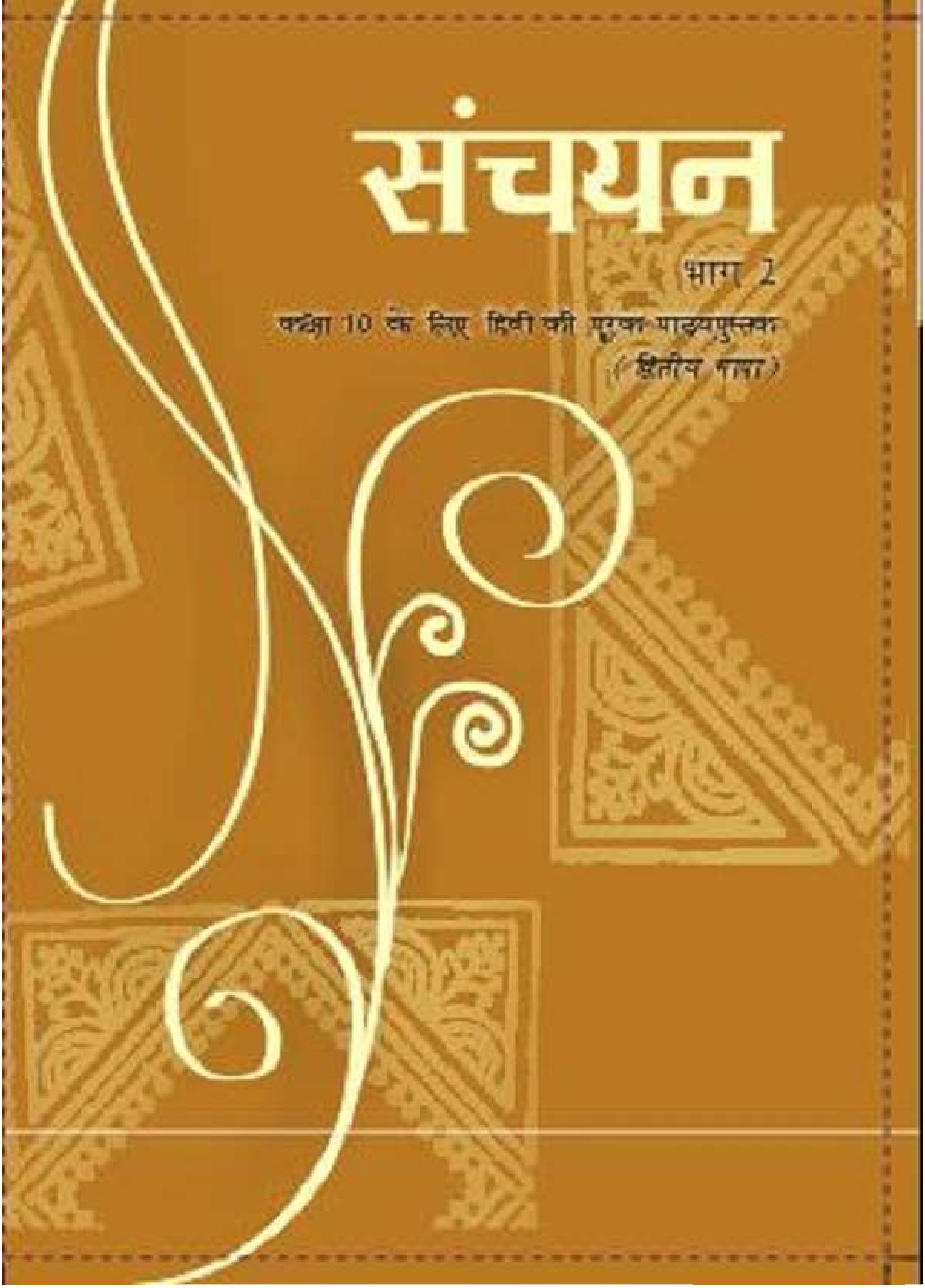

प्रशान्त त्रिपाठी एम०ए०, बी०एड०

हरिहर काका

संचयन

बोध-प्रश्न

1. कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या संबंध है और इसके क्या कारण हैं?

उत्तर:- कथावाचक और हरिहर काका के बीच स्नेह और दुलार का आत्मीय संबंध था। हरिहर काका कथावाचक के पड़ोसी थे और उनसे बचपन से ही एक पिता की तरह प्रेम करते थे, उनके साथ हंसी-ठिठोली करते थे और एक पिता की तरह उन्हें अपने कंधों पर बैठाकर पूरे गांव में घुमाया करते थे। हरिहर काका कथावाचक के लिए उन लोगों में से एक थे, जिनका कथावाचक सम्मान करते थे। पूरे गांव में कथावाचक की सबसे गहरी दोस्ती हरिहर काका से ही थी। वे दोनों आपस में कुछ नहीं छिपाते थे और दोस्तों की तरह खुलकर बातें करते थे।

2. हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

उत्तर:- हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के लगने लगे क्योंकि-

हरिहर काका के भाई भी महंत की तरह स्वार्थी और मतलबी थे हरिहर काका के भाइयों ने भी महंत की तरह ही स्वयं की स्वार्थ पूर्ति के लिए हरिहर काका से प्रेम व आत्मीयता का ढोंग रचा व उनका आदर सत्कार करने का नाटक किया।

हरिहर काका के भाइयों ने भी महंत की तरह ही उनकी जमीन पाने के लिए उन पर अत्याचार किए और उन्हें जानवरों की तरह मारा।

हरिहर काका के भाई व महंत सभी उनके शुभचिंतक होने का दावा करते थे, लेकिन उन सभी की नजर केवल हरिहर काका की जमीन-जायदाद पर थी।

3. ठाकुरबारी के प्रति गांव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृति का पता चलता है?

उत्तर:- ठाकुरबारी के प्रति गांव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे ठाकुरबारी के प्रति उनके मन में बसी श्रद्धा, प्रेम, विश्वास और भक्ति-भावना का पता चलता है। गांव के सभी लोग अपनी प्रत्येक सफलता का श्रेय ठाकुरबारी को देते थे। गांव के हर त्यौहार की शुरुआत ठाकुरबारी से की जाती थी, लोग धान काटकर पहले ठाकुरबारी के लिए अगउम निकालते थे और प्रत्येक महोत्सव व शुभ कार्य में अन्न-वस्त्र की पहली भेंट ठाकुरबारी के नाम की जाती थी। इस सबसे उनकी धार्मिक मनोवृति का पता चलता है। इसे उनका ठाकुरबारी के प्रति अंधविश्वास भी कहा जा सकता है।

4. अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कथावाचक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि हरिहर काका को यह अच्छे से ज्ञात था कि उनके भाइयों में उनके परिवार को उनसे कोई प्रेम नहीं है, वे सभी स्वार्थी हैं और उनकी ज़मीन पाने के लिए ही उनका आदर-सत्कार करने का ढोंग कर रहे हैं। वहीं उन्हें महंत की चिकनी-चुपड़ी बातों व प्रवचनों के पीछे छुपे स्वार्थ का भी भली-भांति ज्ञात था। हरिहर काका ने अपने जीवनकाल में ऐसे कई लोगों को देखा था जिन्होंने जीते-जी अपनी जमीन अपने उत्तराधिकारी व अन्य किसी व्यक्ति के नाम कर दी थी और इसके बाद उन्हें कोई पूछता तक न था। इसीलिए हरिहर काका ने अपने अनुभव के आधार पर यह निर्णय लिया कि वे जीते-जी अपनी जमीन किसी के नाम नहीं करेंगे।

5. हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

उत्तर:- हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले लोग ठाकुरबारी के साधु-संत और उनके पक्षधर थे। ठाकुरबारी का महंत लड़ाकू और दबंग प्रवृत्ति का व्यक्ति था। उसी के कहने पर वे लोग भाला, गंडासा और बंदूक लेकर आए और हरिहर काका को उठाकर ले गए। ठाकुरबारी ले जाकर महंत व उसके आदमी जबरन हरिहर काका के अंगूठे के निशान लेने लग गए और उन्हें मारने-पीटने लगे। बाद में उन्होंने हरिहर काका के हाथ-पांव बांधकर उनके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया और उन्हें पीछे के एक कमरे में बंद करके उस पर एक बड़ा-सा ताला लगा दिया।

6. हरिहर काका के मामले में गांव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर:- हरिहर काका के मामले में गांव के लोग प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से दो वर्गों में बंट गए थे। एक वर्ग के लोग धार्मिक संस्कारों वाले व पेटू और चतुर किस्म के लोग थे। इनका कहना था कि हरिहर काका को अपनी जमीन ठाकुरबारी के नाम कर देनी चाहिए, इससे उन्हें यश व पुण्य की प्राप्ति होगी और ठाकुरबारी का गौरव भी बढ़ेगा। दूसरे वर्ग के लोगों में प्रगतिशील विचारों वाले किसान थे, जिनके घर में हरिहर काका जैसे सदस्य मौजूद थे। उनके अनुसार हरिहर काका को अपने परिवार का साथ देना चाहिए और खून का रिश्ता निभाते हुए अपनी जायदाद उन्हें ही देनी चाहिए; ऐसा न करना उनके साथ अन्याय होगा।

7. कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरण करने के लिए तैयार हो जाता है।"

उत्तर:- लेखक ने ऐसा हरिहर काका के संदर्भ में कहा है। मनुष्य जब तक अज्ञान की स्थिति में रहता है और सांसारिक मोह-माया से बंधा होता है, तब तक उसे मृत्यु भयभीत करती है; लेकिन जिस क्षण वह ज्ञानी हो जाता है अर्थात उसे ज्ञात हो जाता है कि यह संसार नश्वर है, मृत्यु एक अटल सत्य है और सुख-दुख सब हमारा एक भ्रम है, उसी श्रण उसका सारा भय समाप्त हो जाता है और वह मृत्यु के आने पर उसे खुशी-खुशी स्वीकार कर लेता है। प्रस्तुत पाठ में अपने भाइयों और महंत के छल-कपट व स्वार्थ को देखकर हरिहर काका का सारा भ्रम टूट जाता है और वे सांसारिक मोह-माया को त्याग देते हैं।

8. समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- हमारे समाज में रिश्तों का एक विशेष महत्व है। रिश्तों के माध्यम से लोग अपनी बुनियाद से जुड़े रहते हैं और आपस में बंधे रहते हैं। रिश्ते-नाते मनुष्य को संगठित रखते हैं। मनुष्य को अपना सुख-दुख बांटने के लिए एक साथी की आवश्यकता होती है, रिश्ते उनकी इसी जरूरत की पूर्ति करते हैं। रिश्तों के माध्यम से व्यक्ति को समाज में आदर-सत्कार और इज्जत मिलती है, जो उसे आत्मसंतुष्टि प्रदान करती है और उसके जीवन को एक सही दिशा प्रदान करके नकारात्मक से उसे दूर रखती है। रिश्तों के अभाव में जीवन के उतार-चढ़ाव व्यक्ति के जीवन को अंधकार की ओर ले जा सकते हैं।

9. यदि आपके आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस प्रकार मदद करेंगे?

उत्तर:- यदि हमारे आसपास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो हम सबसे पहले उसके परिवारवालों को समझाएंगे। अगर तब भी वे नहीं सुधरे तो मीडिया की मदद लेकर उनकी पोल खोल देंगे, जिससे समाज के सामने अपनी नाक बचाने के चक्कर में उन्हें मजबूरन उस व्यक्ति की सेवा करनी पड़ेगी। महंत व उसके जैसे अन्य लोगों की रिपोर्ट पुलिस में करेंगे और उन्हें जल्द-से-जल्द सजा दिलवाएंगे। इसके साथ-साथ हम रोज उस लाचार व्यक्ति की सेवा करेंगे, उसके पास जाकर उसका सुख-दुख बांटने का प्रयास करेंगे, उसका मानसिक सहारा बनने का प्रयास करेंगे और एक अच्छे मित्र की तरह उसके जीवन का खालीपल दूर करने का प्रयास करेंगे।

10. हरिहर काका के गांव में यदि मीडिया की पहुंच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- हरिहर काका की वर्तमान स्थिति में उन्हें अपने ही भाइयों और परिवारवालों द्वारा किए गए अत्याचारों को सहना पड़ा व इस शोषण के कारण वे मानसिक रूप से बीमार हो गए थे। अगर हरिहर काका के गांव में यदि मीडिया की पहुंच होती तो

स्थिति इससे बिल्कुल भिन्न होती। मीडिया के माध्यम से उनकी स्थिति पूरी दुनिया के सामने लाई जा सकती थी और उन्हें उचित न्याय दिलाया जा सकता था। मीडिया द्वारा यह मामला सरकार के बड़े-बड़े अधिकारियों तक पहुंचाया जा सकता था, जो उन्हें उनके भाइयों व महंत के चंगुल से निकालकर एक सुरक्षित जगह पहुंचा सकते थे और उनके जीवन को सुधारकर उनकी मदद कर सकते थे।

सपनों के-से दिन

संचयन

बोध-प्रश्न

1. कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती- पाठ की किस अंश से यह सिद्ध होता है?

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में लेखक बताते हैं कि उनके आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए परिवारों से थे। लेखक जब छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते थे। उनके कुछ शब्द सुनकर लेखक और उनके साथियों को हंसी भी आने लगती थी। परंतु खेलते समय वे सभी एक-दूसरे की बात बहुत अच्छी तरह समझ लेते थे। पाठ का यह अंश इस बात को सिद्ध करता है कि कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती।

2. पीटी साहब की 'शाबाश' फौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- मास्टर प्रीतम चंद स्कूल के सबसे कठोर और सख्त अध्यापक थे। स्कूल के किसी भी छात्र ने उन्हें कभी मुस्कुराते नहीं देखा था। सभी बच्चे उनके डर से कांप उठते थे। उनकी घुड़कियों के डर से सभी छात्र प्रार्थना के समय बिल्कुल सीधे और कतारबद्ध होकर खड़े रहते थे। छोटी-सी गलती पर भी वे बाघ की तरह झपट पड़ते थे और खाल खींचने पर उतारू हो जाते थे। वे छोटी कक्षाओं के बच्चों को भी कड़ी सजा देने से नहीं कतराते थे। इसीलिए स्काउटिंग के अभ्यास के दौरान बिना किसी गलती के अभ्यास पूरा करने पर पीटी साहब द्वारा दी गई 'शाबाश' लेखक को फौज के तमगों-सी लगती थी।

3. नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

उत्तर:- अक्सर होशियार बच्चों को नयी श्रेणी में मिलने वाली कापियों व किताबों की गंध उत्साहित करती है। लेकिन नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन उदास हो उठता था। इसके निम्नलिखित कारण थे-

नई श्रेणी की मुश्किल पढ़ाई का भय लेखक के बालमन को भयभीत करता था।

नए मास्टरों की मारपीट का भय भी इस अरुचि का एक कारण था। नए अध्यापकों के साथ-साथ पुराने अध्यापकों की भी छात्रों से उपेक्षाएं बढ़ जाती थी और उनकी आशाओं पर खरा न उतरने पर वे चमड़ी उधेड़ने को तैयार रहते थे।

4. स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण 'आदमी' फौजी जवान क्यों समझने लगता था?

उत्तर:- धोबी की धुली वर्दी, पॉलिश किए बूट और जुराब पहनकर जब लेखक स्काउटिंग की परेड करते हुए लेफ्ट-राइट की आवाज या पीटी साहब की व्हिसल से मार्च करते और राइट या लेफ्ट या अबाउट टर्न करने पर अपने छोटे-छोटे बूटों की एड़ियों पर दाएं-बाएं या एकदम पीछे मुड़कर बूटों की ठक-ठक करते हुए अकड़कर चलते थे, तब उन्हें विद्यार्थी नहीं बल्कि एक

महत्वपूर्ण 'आदमी' फौजी जवान जैसा महसूस होता था। स्काउटिंग परेड के दौरान उनकी वेशभूषा व चाल-ढाल उन्हें फौजी होने की अनुभूति करवाती थी।

5. हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

उत्तर:- जब लेखक चौथी श्रेणी में थे तब पीटी साहब उन्हें फारसी पढ़ाते थे। एक दिन उन्होंने छात्रों को याद करने के लिए एक शब्द-रूप दिया, जो वे अगले दिन मुंहजबानी सुनने वाले थे। दूसरे दिन केवल दो-तीन छात्र ही वह शब्द-रूप सुना पाए। इस पर पीटी साहब ने उन्हें झुककर पीठ ऊंची रखते हुए टांगों के पीछे से बाहें निकालकर कान पकड़ने का दंड दिया। उनकी यह बर्बरता व कठोरता देखकर हेडमास्टर शर्मा जी गुस्से से लाल हो उठे और इसी कारण उन्होंने पीटी साहब को मुअत्तल कर दिया।

6. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

उत्तर:- लेखक को मास्टरों की पिटाई और विद्यालय की मुश्किल पढ़ाई के कारण कभी भी स्कूल खुशी से जाने की जगह नहीं लगा। लेकिन कुछ-कुछ स्थितियों में स्कूल जाना उन्हें अच्छा लगता था। इनमें से एक था- स्कूल में होने वाला स्क्वाइटिंग परेड का अभ्यास। स्काउटिंग का अभ्यास करते समय हाथों में नीली-पीली झंडियां पकड़कर वन, टू, थ्री की आवाज पर उन्हें ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं करके लहराना और खाकी वर्दी पहनकर वह गले में दोरंगा रुमाल लटकाकर अभ्यास करना लेखक को बहुत अच्छा लगता था। उन्हें बिना गलती के अभ्यास पूरा करने पर पीटी साहब से मिलने वाली 'शाबाश' भी फौज के तमगों-सी किमती लगती थी।

7. लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएं बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भांति 'बहादुर' बनने की कल्पना करता था?

उत्तर:- लेखक बचपन में गर्मियों की पूरी छुट्टियां खेलने-कूदने में निकाल देते थे। जब छुट्टियों का महीनाभर बचा होता था, तब अपने गृह कार्य की सुध लेते थे और अध्यापकों की मार के डर से बचे हुए छुट्टियों के दिनों के अनुसार काम का हिसाब लगाने लग जाते थे, जैसे- अगर हिसाब के मास्टर जी ने दो सौ सवाल दिए हैं तो दस सवाल रोज़ हल करने पर बीस दिन में पूरा काम हो जाएगा। फिर कुछ और दिन निकल जाने पर दुबारा हिसाब लगाते थे कि सवाल तो रोज पंद्रह भी निकाले जा सकते हैं। ऐसा सोचते-सोचते छुट्टियां खत्म होने लग जाती थी। तब वे अपने उन बहादुर सहपाठियों की तरह सोचने लगते थे, जो मास्टरों की पिटाई गृहकार्य करने से ज्यादा 'सस्ता सौदा' समझते थे। वे अपने सहपाठी 'ओमा' को ऐसे समय में अपना नेता मानते थे और उसी से प्रेरित होकर बहादुर बनने का प्रयास करते थे।

8. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:- पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताएं हमारे सामने आई है-

कठोर व सख्त व्यवहार – पीटी साहब स्कूल के सबसे सख्त अध्यापक थे। उनके डर से सभी छात्र कांप उठते थे।

अनुशासनप्रिय – वे छोटी-से-छोटी गलती पर भी कड़ा दंड देते थे और विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए उन्हें कठोर सजा देते थे।

आदर्शवादी – हेडमास्टर शर्मा जी के गुस्सा करने पर भी उन्होंने अपने व्यवहार व उसूलों में बदलाव लाना स्वीकार नहीं किया और हेडमास्टर शर्मा जी के फैसले को खुशी-खुशी स्वीकार किया।

स्वाभिमानी – हेडमास्टर शर्मा जी द्वारा मुअत्तल किए जाने पर भी उन्हें कोई पछतावा नहीं था, वे आराम से अपने चौबारे में रह रहे थे।

कुशल अध्यापक – वे छात्रों से मुश्किल चीजें याद करने को कहते थे और मुंहज़बानी सुनते थे। छात्र भी उनके भय और उनकी मार से बचने के लिए मेहनत करके मुश्किल चीजें भी याद कर लेते थे।

अच्छे प्रशिक्षक – वे छात्रों को स्काउटिंग परेड का अभ्यास करवाते थे और तब तक अभ्यास करवाते रहते थे, जब तक की सभी छात्र बिना किसी गलती के अभ्यास पूरा नहीं कर लेते थे।

कोमलहृदयी – उन्होंने दो तोते पाल रखे थे। वे उनका बहुत ख्याल रखते थे, रोज उन्हें अपने हाथों से बादाम खिलाते थे और उनसे प्यार से बातें करते थे। यह उनके हृदय की कोमलता को दर्शाता है।

9. विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृति मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ के अनुसार हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि लेखक के बचपन में स्कूलों में अनुशासन बनाए रखने के लिए सख्ती व कठोर सज़ा का माध्यम अपनाया जाता था। छात्र अपने अध्यापकों के डर से कांपते थे। उनके अध्यापकों द्वारा मिले दंड खाल खींचने के मुहावरे का प्रत्यक्ष रुप होते थे। लेकिन आज के समय में इसे बिल्कुल गलत माना जाता है क्योंकि शारीरिक यातनाओं से कई कमजोर-हृदयी छात्र लाइलाज बीमारियों, मानसिक रोगों, आदि का शिकार हो जाते हैं, जिससे उनका पूरा जीवन नष्ट हो जाता है। किसी भी प्रकार का शारीरिक व मानसिक शोषण बच्चों के साथ अन्याय है। बच्चों के बालमन को सही राह दिखाने के लिए एक सभ्य और प्रेमयुक्त तरीका अपनाना चाहिए। बुरी आदतें छोड़ने के लिए उन्हें पुरस्कार का लालच भी दिया जा सकता है।

10. बचपन की यादें मन को गुदगुदाने वाली होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।

उत्तर:- छात्र अपने स्कूली जीवन की यादों का वर्णन करे।

11. प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज़्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बर्बाद न करने की नसीहत देते हैं। बताइए-

(क). खेल आपके लिए क्यों जरूरी हैं?

(ख). आप कौन से ऐसे नियम-कायदों को अपनाएंगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

उत्तर:-

(क). खेलों का हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। खेलों से बच्चों, बड़ों, सभी का शारीरिक व मानसिक विकास होता है। खेल एक तरह का व्यायाम और योग ही है, जिससे शरीर स्वस्थ और तंदुरुस्त रहता है। विभिन्न खेल-आयोजनों के कारण समाज में आपसी भाईचारा, सद्भावना, सांप्रदायिकता, आदि बने रहते हैं। बच्चे मिल-जुलकर खेल खेलने से व्यवहारिकता सीखते हैं।

(ख). हम निम्नलिखित नियम-कायदों को अपनाएंगे जिससे किसी को भी हमारे खेल पर आपत्ति नहीं होगी-

निश्चित समय-सारणी बनाकर खेलने-कूदने का समय सीमित करके

खेलों के दौरान लड़ाई-झगड़ा न करके

मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक खेल खेलकर

मन लगाकर पढ़ाई करके

पढ़ाई को उचित समय देकर

अपने साथियों के साथ बुरी आदतों व गलत चीज़ों से दूर रहकर

अपने खान-पान का सही ध्यान रखकर

बड़ों का कहना मानकर और उन्हें उचित आदर-सम्मान देकर

टोपी शुक्ला

संचयन

बोध-प्रश्न

1. इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

उत्तर:- इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्वपूर्ण हिस्सा है क्योंकि टोपी की सबसे पहली दोस्ती इफ़्फ़न से ही हुई थी और उसके जीवन में घटित कहीं घटनाएं इफ़्फ़न से जुड़ी हुई हैं। व्यक्ति के बचपन की दोस्ती का उसके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि वह उसे जीवनभर याद रहती है और हमेशा आनंदित करती रहती है; इसीलिए टोपी के जीवन की कहानी इफ़्फ़न के वर्णन के बिना अधूरी और बेमानी है। ये दोनों अलग-अलग मजहब से वास्ता रखते थे, लेकिन फिर भी इफ़्फ़न टोपी की कहानी का एक अटूट हिस्सा था।

2. इफ़्फ़न की दादी अपने पीहर क्यों जाना चाहती थीं?

उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी एक जमींदार की बेटी थीं। बचपन से ही वे दूध-घी खाते-खाते बड़ी हुई थीं। लेकिन अपने ससुराल लखनऊ में वे उस दही के लिए तरस गई थी जो घी पिलाई हांडियों में असामियों के यहां से आया करता था। इसलिए जब वे मायके जाती थी तो लपड़-शपड़ जी भरकर खा लेती थी। ससुराल में उन्हें हर वक्त मौलविन बने रहना पड़ता था। यहां उनकी आत्मा हमेशा बेचैन रहती थी। यही कारण था कि वे अपने पीहर जाना चाहती थीं।

3. दादी अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की इच्छा पूरी क्यों नहीं कर पाई?

उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी का विवाह लखनऊ के मौलवी के घर हुआ था। जब उनके बेटे का विवाह हुआ तब उनकी गाने-बजाने व नाचने-गाने की बहुत इच्छा हुई, लेकिन मौलवियों के घर शादियों में गाना बजाना नहीं होता इसलिए उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो पाई।

4. 'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर:- टोपी के परिवार वाले कट्टर हिंदू थे। आजकल के लोगों की तरह उनकी सोच इतनी आजाद नहीं थी। वे मुसलमानों से दूर ही रहना पसंद करते थे। 'अम्मी' एक उर्दू का शब्द है, जो साधारणतः मुसलमानों द्वारा प्रयोग में लिया जाता है। टोपी के मुंह से 'अम्मी' शब्द सुनकर सभी लोग हैरान व परेशान होकर उसकी तरफ देखने लग गए। खाने की मेज पर जितने भी हाथ थे, सभी रुक गए। सभी भौंचक्के होकर टोपी को एकटक देखने लग गए। उनकी परंपराओं की दीवारें डोलने लग गईं। उनके धर्म पर संकट के बादल मंडराने लग गए। सभी ने अंदाजा लगा लिया कि टोपी किसी मुसलमान लड़के के साथ रहने लग गया है और इस अनुमान के सही साबित होने पर उसकी मां व दादी ने उसकी खूब पिटाई करी।

5. दस अक्टूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में क्या महत्व रखता है?

उत्तर:- दस अक्टूबर सन् पैंतालीस का दिन टोपी के जीवन में विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इसी दिन टोपी के पहले और एकमात्र मित्र इफ़्फ़न के पिता का तबादला लखनऊ से मुरादाबाद में हो गया था और इसके कुछ ही दिनों पहले इफ़्फ़न की दादी का देहांत हो गया था, जो टोपी के दिल के बहुत करीब थीं। अब टोपी बिल्कुल अकेला पड़ गया था, इसलिए इस दिन उसने कसम खा ली थी कि अब वह किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसका बाप ऐसी नौकरी करता हो जिसमें बदली होती रहती है।

6. टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी टोपी से बहुत प्यार करती थीं। बाकी लोग जब टोपी को छेड़ते थे, तब वे बीच-बचाव करने आ जाती थी और उसे अपने पास बुलाकर प्यारी-प्यारी बातें करती थी, जो टोपी को गुड़ की डली, अमावट और तिलवा से भी मीठी लगती थीं। टोपी की मां की भाषा उसकी दादी और पिता को बिल्कुल पसंद नहीं थी, लेकिन वह बोली टोपी के दिल में उतर गई थी। इफ़्फ़न की दादी की बोली भी टोपी की मां की तरह ही थी। उसे वे दोनों एक ही पार्टी की दिखाई दीं। इफ़्फ़न की दादी टोपी की दादी की तरह कभी चीखती-चिल्लाती नहीं थी। इस कारण उसे अपनी दादी से नफरत थी और इसीलिए उसने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही थी।

7. पूरे घर में इफ़्फ़न को अपनी दादी से ही विशेष स्नेह क्यों था?

उत्तर:- इफ़्फ़न को अपने घर के सभी लोगों से प्रेम था, लेकिन अपनी दादी से उसे विशेष स्नेह था; क्योंकि उसकी दादी ने उसे कभी डांटा-मारा नहीं था। वे बहुत ही विनम्र और मधुभाषी महिला थीं। उसकी अम्मी कभी-कभी उसे डांट-मार लिया करती थीं, उसकी बाजी भी किसी-किसी बात पर उस पर गुस्सा कर लेती थीं और उसके अब्बू भी कभी-कभी घर में न्यायालय की तरह कठोर फैसला सुना दिया करते थे; लेकिन इफ़्फ़न की दादी ने कभी भी उसका दिल नहीं दुखाया था। दादी उसे रात में सोने से पहले बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमज़ा, गुलबकावली, हातिमताई, पंच फुल्ला रानी की कहानियां सुनाया करती थीं।

8. इफ़्फ़न की दादी के देहांत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा?

उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी टोपी से भी इफ़्फ़न की तरह ही प्रेम करती थीं। टोपी इफ़्फ़न के घर जाकर हमेशा दादी के पास बैठने का प्रयास करता था। उनकी बोली उसके मन में उतर गई थी। उनकी प्रेमपूर्वक कही गई बातें उसे गुड़ से भी मीठी व आम से भी रसीली लगती थी। इफ़्फ़न की दादी और टोपी का स्नेहभरा आत्मीय रिश्ता बन चुका था। टोपी का इफ़्फ़न के घर जाने का मुख्य उद्देश्य उसकी दादी का स्नेह और लाड-प्यार पाना ही होता था। उसे इफ़्फ़न के घर में किसी और से इतना लगाव नहीं था, इसीलिए इफ़्फ़न की दादी के चले जाने के बाद उसे इफ़्फ़न का घर खाली-सा लगा।

9. टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मजहब और जाति के थे पर एक अनजान अटूट रिश्ते में बंधे थे। इस कथन के आलोक में अपने विचार लिखिए।

उत्तर:- टोपी हिंदू धर्म से वास्ता रखता था और इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम धर्म से, लेकिन दोनों को एक-दूसरे से अपार स्नेह और लगाव था। दोनों अलग-अलग मजहब और जाति के थे, लेकिन प्रेम के अटूट रिश्ते में बंध गए थे क्योंकि प्रेम जात-पात और धर्म नहीं देखता। इफ़्फ़न की दादी टोपी से अपने पोते की तरह ही प्यार करती थीं। टोपी भी उनके घर सिर्फ दादी की प्रेमभरी बातें सुनने ही जाता था। दादी की ममताभरी बातें, मीठी बोली व विनम्र स्वभाव टोपी के मन में उतर गया था। टोपी इफ़्फ़न की दादी का नाम भी नहीं जानता था, लेकिन उनका स्नेह उसे उनकी ओर आकर्षित करता था। उसने दादी के हज़ार बार कहने पर भी उनके हाथ से कभी कोई चीज़ नहीं खाई, लेकिन वह उनका लाड-प्यार पाने के लिए हमेशा उनके पास चला आता था।

10. टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। बताइए-

(क). ज़हीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फेल होने क्या कारण थे?

(ख). एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

(ग). टोपी की भावात्मक परेशानियों को मद्देनजर रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक बदलाव सुझाइए।

उत्तर:-

(क). टोपी बहुत ज़हीन अर्थात् होशियार व तेज दिमाग वाला था; लेकिन फिर भी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया था। उसके दो बार लगातार फेल होने के निम्नलिखित कारण थे-

पहले साल उसे पढ़ने का समय नहीं मिल पाया था क्योंकि घर के सभी लोग छोटे-मोटे सारे काम उसी से करवाते थे और जब उसे पढ़ने का समय मिलता था तब तक भैरव उसकी कापियों के पन्नों के हवाई जहाज बना चुका होता था।

दूसरे वर्ष वह इसलिए फेल हो गया था क्योंकि उसे टाइफाइड हो गया था।

(ख). एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को निम्नलिखित भावात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा-

उसके सभी साथी आगे निकल गए थे और उसे उन बच्चों के साथ बैठना पड़ रहा था जो उससे छोटे थे। यह उसके लिए शर्मिंदगी का कारण था।

अध्यापक कमजोर बच्चों को उसका उदाहरण देकर पढ़ने के लिए कहते थे और उस पर व्यंग्य कसकर उसे अपमानित करते थे।

कक्षा में उसका मजाक उड़ाया जाता था।

कोई भी अध्यापक उसके प्रश्नों के जवाब नहीं सुनता था और यह कह कर टाल देता था कि उसे तो इन दो-तीन सालों में सभी जवाब मुंहज़बानी याद हो गए होंगे।

उसके सभी मित्र बिछड़ गए थे और वह कक्षा में अकेला पड़ गया था।

(ग). छात्रों को टोपी जैसी स्थिति से बचाने के लिए हमारी शिक्षा व्यवस्था में निम्नलिखित बदलाव लाए जाने चाहिए-

छात्रों व शिक्षकों को सख्त हिदायत दी जानी चाहिए कि कक्षा में ऐसे बच्चों को अपमानित न किया जाए और उनका मजाक ने बनाया जाए।

ऐसे बच्चों को अगली कक्षा में बैठने दिया जाना चाहिए और अगले साल एक साथ दोनों कक्षाओं की परीक्षाएं देने का नियम बना देना चाहिए।

उनके लिए पिछली कक्षा की पढ़ाई करवाने के लिए विशेष कक्षाएं लगवानी चाहिए।

11. इफ़्फ़न की दादी के मायके कस्टोडियन में क्यों चला गया?

उत्तर:- इफ़्फ़न की दादी पूर्वी भारत के ऐसे स्थान की रहने वाली थी जो भारत-पाकिस्तान के विभाजन के समय पाकिस्तान में चला गया था। उनका विवाह होने के बाद वे लखनऊ आ गई थीं और उनके मायके वाले भी कराची रहने लग गए थे। इस कारण उनके पुश्तैनी घर को संभालने वाला कोई नहीं था और उस पर किसी का मालिकाना हक नहीं था। ऐसी संपत्ति सरकार अपने कब्जे में ले लेती है और इसी नियम के अनुसार उनकी दादी के मायके का घर कस्टोडियन में चला गया था।

स्पर्श

भाग 2

कक्षा 10 के लिए हिंदी

(द्वितीय भाषा) की पाठ्यपुस्तक

प्रशान्त त्रिपाठी एम०ए०, बी०एड०

कबीर – साखी

पद्य खंड

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. मीठी वाणी बोलने से औरों को सुख और अपने तन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर:- कबीर ने मीठी वाणी को चमत्कारिक बताया है। मीठी वाणी के प्रयोग से बड़े-से-बड़े दुश्मन को भी दोस्त बनाया जा सकता है। मीठी वाणी बोलने से मनुष्य के मन की कटुता, क्रोध, आपसी-द्वेष और ईर्ष्या समाप्त होती है और जीवन में शांति व प्रेम बढ़ जाता है, जिससे स्वयं को भी आत्मिक सुख और शांति मिलती है एवं दूसरे भी प्रसन्न व मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। मीठी वाणी का प्रयोग करने से मनों की दूरियां समाप्त होती है।

2. दीपक दिखाई देने पर अँधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत साखी में कबीर ने दीपक द्वारा ज्ञान को दर्शाया है। जिस प्रकार दीपक के जलने या दिखाई देने पर अंधकार मिट जाता है, उसी प्रकार जब मनुष्य के हृदय में ज्ञान रूपी दीपक जल उठता है व उसे उस दीपक का आभास हो जाता है, तब उस व्यक्ति के मन में बसे अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, भ्रम, मोह, लोभ, आदि सभी विकार नष्ट हो जाते हैं और उसका तन व मन स्वच्छ और निर्मल हो जाता है।

3. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते?

उत्तर:- ईश्वर निराकार है और कण-कण में मौजूद है लेकिन हम उसे नहीं देख पाते क्योंकि मनुष्य का मन मोह-माया, अहंकार, लोभ, ईर्ष्या, विलासिताओं आदि के वशीभूत होता है। ईश्वर को पाने के लिए हमें ज्ञान की आवश्यकता होती है, जो हमारे मन के सभी विकारों को खत्म करके हमें ईश्वर के करीब ले जाता है। जिस प्रकार मर्ग अपनी ही नाभि में बसी कस्तूरी को पूरे जंगल में ढूंढता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने मन में बसे ईश्वर को मंदिर, मस्जिद जैसे स्थानों पर ढूंढता फिरता है।

4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ 'सोना' और 'जागना' किसके प्रतीक हैं? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- जो व्यक्ति सुख सुविधाओं और विलासिताओं का भोग करे, खाए पिए और सोए, वह सुखी है; और जो व्यक्ति ईश्वर का ध्यान लगाने के लिए व उनकी भक्ति करने के लिए जागता है, वह दुखी है। यहां 'सोना' अज्ञानता से घिरे होने एवं मोह-माया से बंधे होने का प्रतीक है; और 'जागना' ज्ञानी होने का प्रतीक है। कबीर के अनुसार संसार के सभी अज्ञानी लोग सुख-सुविधाओं और विलासिताओं का भोग करने को ही वास्तविक सुख मानते हैं और ध्यान लगाकर ईश्वर को जानने का प्रयास करने को दुःख मानते है; जो कि उनकी मूर्खता है।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है?

उत्तर:- कबीर के अनुसार हमें अपनी निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने करीब रखना चाहिए, ताकि वह हमें हमारी कमियों से अवगत करा सके और हम उन कमियों को दूर करके बेहतर बन सकें। हमारे अंदर ऐसी बहुत-सी कमियां होती है, जिनका हमें आभास भी नहीं होता; लेकिन एक निंदा करने वाला व्यक्ति हमारी निंदा करने के लिए कमियां ढूंढ ही लेता है। वह हमारे शुभचिंतक की तरह, हमें दिन-ब-दिन बेहतर बना देगा और बिना साबुन व पानी के हमारे स्वभाव को निर्मल कर देगा।

6. ‘ऐकै अषिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होई’ – इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर:- इस पंक्ति में कवि ने शास्त्रीय ज्ञान के बजाय प्रेम और आत्मीयता को महत्व दिया है और कहा है कि बड़ी-बड़ी पोथियां और ग्रंथ पढ़ने से कोई पंडित अर्थात् ज्ञानी नहीं बन जाता, बल्कि जिसने एक अक्षर प्रेम का पढ़ लिया, वही ज्ञानी है। कवि के अनुसार मोह-माया, अहंकार, द्वेष, आदि को मिटाकर ईश्वर का ध्यान करना और सबसे प्रेम की भावना रखना ही वास्तविक ज्ञान है।

7. कबीर की उध्दृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कबीर की भाषा पूर्वी जनपद की भाषा थी। कबीर जगह-जगह भ्रमण कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे; अतः उनके द्वारा रचित साखियों में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है, इसी कारण उनकी भाषा को ‘पचमेल खिचड़ी’ और ‘सधुक्कड़ी’ भी कहा जाता है। कबीर कि साथियों में बहुत ही सरल, सहज और लयबध्द शब्दों का प्रयोग हुआ है।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों का तात्पर्य है कि विरह-व्यथा सर्पदंश से भी अधिक घातक होती है। सांप के काटने पर फिर भी शरीर में प्रवेश हुए ज़हर को निकालकर झाड़-फूंक से सही किया जा सकता है, लेकिन जिस व्यक्ति के मन में विरह का सांप कुंडली मारकर बैठ गया हो, उस पर किसी मंत्र का कोई असर नहीं होता और मन में बसी बिछड़न की व्यथा उस व्यक्ति को मिलने के लिए निरंतर तड़पाती रहेगी।

2. कस्तूरी कुंडलि बसै, मृग ढूँढै बन माँहि।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति में कबीर का कहना है कि जिस प्रकार कस्तूरी मृग की नाभि में ही समाई होती है, लेकिन वह अज्ञानता के कारण उसे पूरे जंगल में घूमता फिरता है; उसी प्रकार ईश्वर भी सर्वत्र हैं और कण-कण में समाए हुए हैं, लेकिन अपने अहंकार, लोभ, मोह एवं अज्ञानतावश मनुष्य उसे विभिन्न धार्मिक स्थलों पर ढूंढता फिरता है।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने ‘मैं’ शब्द से व्यक्ति के अहंकार को दर्शाया है और कहा है कि जब व्यक्ति के मन में अहंकार होता है, तब ज्ञान अर्थात् ईश्वर नहीं होते। एक अज्ञानी व्यक्ति को अपने अहंकार के कारण ईश्वर दिखाई नहीं देते, लेकिन जब उसका अहंकार खत्म हो जाता है और उसके जीवन का अज्ञान-रूपी अंधकार ज्ञान-रूपी दीपक से खत्म हो जाता है, तब उसका सारा भ्रम टूट जाता है। अहंकार और ईश्वर का साथ साथ रहना नामुमकिन है।

4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

उत्तर:- कबीर के अनुसार बड़ी-बड़ी पोथियां और ग्रंथ पढ़ने से ज्ञानी नहीं बना जा सकता; बल्कि प्रेम का मात्र एक शब्द पढ़ने से व्यक्ति ज्ञानी बन सकता है। इन पंक्तियों में कवि ने किताबी ज्ञान की अपेक्षा प्रेम भाव और मनुष्यता को अधिक महत्वपूर्ण बताया है। सबके प्रति प्रेम की भावना रखना और अपने मन के सभी विकारों को दूर करके ईश्वर का ध्यान करना ही वास्तविक ज्ञान है।

भाषा-अध्ययन

1. पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रुप उदाहरण के अनुसार लिखिए।

उदाहरण: जिवै – जीना

औरन, माँहि, देख्या, भुवंगम, नेड़ा, आँगणि, साबण, मुवा, पीव, जालौं, तास।

उत्तरः-

औरन – औरों/ दुसरों

माँहि – अंदर

देख्या – देखा

भुवंगम – सांप

नेड़ा – नज़दीक/ निकट

आँगणि – आंगन

साबण – साबुन

मुवा – मरा

पीव – प्रेम

जालौं – जलाऊं

तास – उस

मीरा – पद

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तरः- पहले पद में मीरा ने हरि को सब की पीड़ा हरने वाला बताया है और उनकी दयालुता का स्मरण करवाया है। मीरा ने कहा है कि जिस प्रकार आपने द्रौपदी का वस्त्र बढ़ाकर भरी सभा में उसकी लाज बचाई, प्रहलाद को बचाने के लिए नरसिंह का रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को मारा और मगरमच्छ के मुंह से हाथी को बचाया; उसी प्रकार अपनी भक्त मीरा को सांसारिक मोह-माया से निकालकर उसकी भी पीड़ा हरो।

2. दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः- मीराबाई ने श्याम से विनती की है कि वे उसे अपनी दासी बना ले; क्योंकि मीराबाई ने सांसारिक मोह-माया को त्यागकर अपना संपूर्ण जीवन श्रीकृष्ण को सौंप दिया है और वे अपने प्रभु के निकट रहना चाहती है। श्रीकृष्ण की दासी बनने पर उन्हें कृष्ण के दर्शन, जेब खर्ची के रुप में उनका स्मरण और भक्ति रूपी जागीर- तीनों प्राप्त होंगे, जिससे उनका जीवन सफल हो जाएगा।

3. मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तरः- मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन करते हुए बताया है कि उनके सर पर विराजित मोर मुकुट, तन पर धारण पीले वस्त्र एवं गले में सुशोभित वैजंती माला बहुत ही आकर्षक लगते है। और जब वे वृंदावन में अपनी गायों को चराते हुए बांसुरी बजाते हैं, तब वह दृश्य बेहद मनमोहक लगता है।

4. मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः- मीराबाई के पदों की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती का मिश्रण पाया जाता है। वही उनके पदों में पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी का प्रयोग भी देखा जा सकता है। उन्होंने सरल, सहज और आम बोलचाल में उपयुक्त होने वाले शब्दों का प्रयोग

किया है। उनके सभी लेख श्रीकृष्ण को समर्पित है, इसलिए उनमें कोमलता, भावनाओं व प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान है। मीराबाई के पदों में भक्तिरस है। इनके पदों में अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकार का प्रयोग हुआ है।

5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उत्तर:- मीराबाई ने संसार की सारी मोह-माया का त्यागकर अपना संपूर्ण जीवन श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया हैं। वे श्रीकृष्ण को अपना प्रियतम मानती हैं और उनके समीप रहना चाहती है। वे बार-बार कृष्ण के दर्शन करना चाहती हैं। वे कृष्ण को पाने के लिए उनकी दासी बनने को भी तैयार है। उनकी दासी बनकर वे उनकी सेवा करना चाहती है, उनके टहलने के लिए बगीचे लगाना चाहती है, वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं के गीत गाना चाहती है और आसानी से श्री कृष्ण के दर्शन पाने के लिए वृंदावन के ऊँचे-ऊँचे महलों में बहुत-सी खिड़कियां बनवाना चाहती है। वे उनके दर्शन के लिए कुसुम्बी रंग की साड़ी पहनकर यमुना के तट पर मध्यरात्री के समय प्रतीक्षा करने को तैयार भी हैं। वे अपने प्रियतम के दर्शन पानी के लिए हर संभव प्रयास करना चाहती हैं।

निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

1. हरि आप हरो जन री भीर।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में मेरा श्रीकृष्ण से निवेदन करती है कि जिस प्रकार आपने द्रोपदी का वस्त्र बढ़ाकर उसकी लाज बचाई और भक्त प्रहलाद को हिरण्यकश्यप से बचाने के लिए नरसिंह का अवतार लिया, उसी प्रकार अपनी भक्त मीराबाई पर भी दया-दृष्टि डालिए और उसके दुखों का अंत कीजिए। यहां मीराबाई श्री कृष्ण की दयालुता का बखान करती है।

2. बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर।
दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियां मीराबाई के पदों से ली गई है जिसमें मीराबाई ने श्री कृष्ण को जगत का दुःख-हर्ता बताया है और उनकी लीलाओं का बखान किया है। उन्होंने कहा है कि जिस प्रकार आपने डूबते हुए हाथी को बचाया और उसे मगरमच्छ के मुंह से निकाला, उसी प्रकार अपनी दासी मीरा की भी पीड़ा दूर करो।

3. चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

उत्तर:- मीराबाई ने श्रीकृष्ण के लिए सांसारिक मोह-माया का त्याग करके अपना संपूर्ण जीवन उनको समर्पित कर दिया और अपने प्रभु को पाने के लिए वे उनकी दासी बनने की इच्छा रखती हैं। वे प्रभु की दासी बनकर उनके निकट रहना चाहती है और उनकी सेवा करना चाहती है। प्रभु की दासी बन कर मीराबाई उनके दर्शन, जेब-खर्ची के तौर पर उनका स्मरण और भक्ति की जागीर पा लेना चाहती है।

भाषा-अध्ययन

1. उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए –

उदाहरण:-

भीर – पीड़ा, कष्ट, दुख; री – की

चीर, बूढ़ता, धारयो, लगास्यूँ, कुंजर, घणा, बिन्दराव, सरसी, रहज्यूँ, हिवडा, राख।

उत्तर:-

चीर – वस्त्र, कपड़े

बूढ़ता – डूबता

धारयो – धारण करना

लगास्यूँ – लगाऊंगी

कुण्जर – हाथी

घणा – काफ़ी, बहुत

बिन्दराव – वृंदावन

सरसी – पूरी होगी

रहस्युं – रहूंगी

हिवडा – दिल/ह्रदय

राखो – रखो

कुसुंबी – लाल रंग की

बिहारी - दोहे

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. छाया भी कब छाया ढूँढ़ने लगती है?

उत्तर:- जेठ की घनी दोपहरी में जब सूरज सिर के ऊपर आ जाता है और आग बरसाता है, तब गर्मी इतना भयानक और प्रचंड रूप धारण कर लेती है कि ऐसा प्रतीत होता है, मानो छाया भी छाया ढूंढ रही है और विश्राम के लिए अपने भवन में जाकर छिप गई है।

2. बिहारी की नायिका यह क्यों कहती है 'कहिहै सबु तेरौ हियौ, मेरे हिय की'? बात-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- बिहारी की नायिका कहती है कि अपने प्रिय से बिछड़ने के कारण वह अत्यंत दु:खी और व्याकुल है। अपनी विरह-व्यथा वह लिखकर शब्दों में बयां नहीं कर सकती और किसी अन्य से संदेश भिजवाने में उसे शर्म आ रही है। उसके और उसके प्रियतम के मन का हाल एक जैसा है, इसलिए वह अपने प्रिय को याद करके कहती है कि अब उसे ही अपने दिल पर हाथ रखकर उसके हाल जाना पड़ेगा।

3. सच्चे मन में राम बसते हैं-दोहे के संदर्भानुसार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत कविता में कवि बिहारी ने कहा है कि माला जपने, पीले वस्त्र धारण करने, तिलक लगाने- जैसे विभिन्न आडंबरों से ईश्वर की प्राप्ति नहीं की जा सकती; क्योंकि ईश्वर कांच के समान क्षणिक मन में कभी वास नहीं करते। ईश्वर ऐसे सच्चे मन में वास करते हैं, जो छल, कपट, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आदि से मुक्त हो और साफ व निर्मल हो।

4. गोपियाँ श्रीकृष्ण की बाँसुरी क्यों छिपा लेती हैं?

उत्तर:- गोपियां श्रीकृष्ण से अत्यधिक प्रेम करती है और उनसे बातें करना चाहती; लेकिन श्रीकृष्ण हर समय बांसुरी बजाने में व्यस्त रहते हैं और गोपियों से बात नहीं करते। इसलिए गोपियां उनका ध्यान उनकी बांसुरी से हटाकर अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उनकी बांसुरी छिपा लेती है।

5. बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी कैसे बात की जा सकती है, इसका वर्णन किस प्रकार किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- बिहारी कवि ने सभी की उपस्थिति में भी आंखों, इशारों और संकेतों से होने वाली वार्ता का वर्णन किया है। भरे भवन में नायक नायिका को मिलने का इशारा करता है, नायिका मना करती है, नायक उसे इशारों से ही रीझाने और मनाने का प्रयास करता है, जिससे नायिका खीज उठती है। दोनों के नयन आपस में मिलते है, जिससे नायिका शरमा जाती है और नायक प्रसन्न हो उठता है।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. मनौ नीलमनी-सैल पर आतपु पर्यौ प्रभात।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहा है कि श्रीकृष्ण के नीले शरीर पर सुसज्जित पीले वस्त्र, नीलमणि पर्वत पर प्रातः कालीन पड़ने वाली सूरज की पीली किरणों जैसे प्रतीत होते हैं।

2. जगतु तपोबन सौ कियौ दीरघ-दाघ निदाघ।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा कवि कहना चाहता है कि ग्रीष्म ऋतु की प्रचंड गर्मी और तप में पूरा वन तपोवन जैसा प्रतीत होता है। सांप व मोर और हिरण व शेर एक-दूसरे के शत्रु है, लेकिन जेठ की भयानक गर्मी में अपनी सारी दुश्मनी भूलकर ये सभी साथ में रहते है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो सूरज के तप में तपकर ये सभी तपस्वी बन गए हों।

3. जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।

मन-काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु।।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों द्वारा कवि ने विभिन्न आडंबरों का खंडन करके ईश्वर की सच्ची भक्ति करने पर बल दिया है। कवि के अनुसार माला जपने, पीले वस्त्र धारण करने, माथे पर तिलक लगाने- जैसे दिखावे करने से कुछ प्राप्त नहीं होता। कांच के सामान क्षणभंगुर मन वाले व्यक्ति जिनका हृदय अस्थिर होता है, वे यह सभी आडंबर करके व झूठा प्रदर्शन करके दुनिया को धोखा दे सकते है, परन्तु ईश्वर तो उन्हीं लोगों के साफ और सच्चे मन में बसते हैं, जिनका मन अहंकार, छल, कपट, मोह-माया, जैसे विकारों से मुक्त होता है और जो ईश्वर का सच्चे मन से ध्यान करते है।

मनुष्यता

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. कवि ने कैसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

उत्तर:- मनुष्य जीवन नश्वर है और प्रत्येक मनुष्य की मृत्यु निश्चित है; लेकिन जो व्यक्ति अपने जीवनकाल में परोपकार और भलाई वाले कार्य करता है, उसे मरणोपरांत भी याद किया जाता है। जो मनुष्य अपना जीवन दूसरों की भलाई मे लगा देता है, उस व्यक्ति को इतिहास के पन्नों में जगह मिलती है और प्रस्तुत कविता में कवि ने ऐसी मृत्यु को ही सुमृत्यु कहा है। ऐसे व्यक्तियों का गुणगान हर तरफ होता है और स्वयं धरती भी उनकी कृतज्ञ होती है।

2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तर:- उदार व्यक्ति दूसरों की भलाई करता है और अपना जीवन दूसरों के हित व पुण्य में ही लगा देता है। उदार व्यक्ति सबके प्रति करुणा, उपकार, प्रेम व सहानुभूति की भावना रखता है और उसका मन-मस्तिष्क हमेशा दूसरों की भलाई के लिए तत्पर रहता है। एक उदार व्यक्ति दूसरों के भले के लिए अपने निजी स्वार्थ को भी त्याग देता है। ऐसे लोगों को मृत्यु के बाद भी याद किया जाता है और इतिहास के पन्नों पर इनको एक अलग स्थान दिया जाता है। स्वयं धरती भी ऐसे मनुष्य की कीर्ति का गुणगान गाती है और उनकी आभारी होती है।

3. कवि ने दधीचि, कर्ण, आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?

उत्तर:- कवि ने दधीचि, कर्ण, आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर परोपकार, भलाई और बलिदान का संदेश दिया है। महान दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी हड्डियाँ दान कर दी थी, कर्ण ने अपना रक्षा-कवच दान दे दिया, भूख से व्याकुल होते हुए भी रंतिदेव ने अपना भोजन-थाल किसी और को दे दिया था और उशीनर ने एक कबूतर की जान बचाने के लिए स्वयं के शरीर का माँस दे दिया था। मनुष्य का शरीर अनित्य और नश्वर है, इसका नाश निश्चित है; इसलिए मनुष्य को इसका मोह नहीं रखना चाहिए और दूसरों के हित व चिंतन में अपने जीवन का बलिदान करने में ही मनुष्य के जीवन की सार्थकता है।

4. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व-रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तर:-

रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

5. 'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- इस पंक्ति का आशय है कि सभी मनुष्य एक-दूसरे के भाई-बंधु है और एक समान है। ईश्वर ने सभी मनुष्य को एक समान बनाया है और हम सभी उनकी संतान है। इसलिए सबको मिल-जुल कर रहना चाहिए, एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति और प्रेम की भावना होनी चाहिए एवं एक दूसरे का दुख बांटना चाहिए। इस धरती पर केवल मनुष्य ही ऐसा जीव है जिसमें भावनाओं को समझने की क्षमता है और जिसे बंधुत्व का महत्व पता है। मिलजुल कर रहने में ही मनुष्यों की भलाई है।

6. कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?

उत्तर:- कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा इसलिए दी है क्योंकि एकता में ही शक्ति है। सभी मनुष्यों को एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति, प्रेम, करुणा वह परोपकार की भावना रखनी चाहिए, एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए एवं एक-दूसरे का दुख-दर्द बांटना चाहिए। एकता में ही मानव-जाति की भलाई है और इसी से मनुष्य का अस्तित्व कायम रह पाएगा। ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट, आदि की भावना रखनी से मनुष्यता का अंत होता है और इससे पूरी मनुष्य-जाति संकट में पड़ जाती है।

7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करना चाहिए? इस कविता के आधार पर लिखिए।

उत्तर:- प्रस्तुत कविता के अनुसार मनुष्य को ऐसा जीवन व्यतीत करना चाहिए, जो दूसरों के काम आए। मनुष्य को स्वार्थी न बनकर दूसरों के हित के लिए जीना चाहिए। जो मनुष्य दूसरों की भलाई और सेवा में अपना जीवन व्यतीत कर देता है, त्याग और बलिदान का जीवन जीता है और भलाई व पुण्य के कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है, उसकी उदारता का बखान पूरे संसार में होता है उससे इतिहास के पन्नों में जगह मिलती है और स्वयं धरती भी उसकी कृतज्ञ होती है। ऐसी मृत्यु को कवि ने सुमृत्यु कहा है।

8. 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तरः- 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि मनुष्यता, प्रेम, एकता, दया, करुणा, परोपकार, सहानुभूति,सद्भावना और उदारता से परिपूर्ण जीवन जीने का संदेश देना चाहता है। स्वयं के लिए जीवन जीना पशु के समान जीवन जीने जैसा है। धरती पर मनुष्य एक ऐसा जीव है जो एक दूसरे की भावनाओं को समझने की क्षमता रखता है; इसलिए मनुष्य को मिल-जुलकर, एक दूसरे की सहायता करके एवं प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। मनुष्य को मृत्यु से भयभीत नहीं होना चाहिए, दूसरों की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए और कभी भी मन में अहंकार, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष, आदि की भावना नहीं रखनी चाहिए।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवाद बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने सहानुभूति की भावना को ही से बड़ी पूंजी बताया है। सहानुभूति से बढ़कर कोई पूंजी नहीं है, क्योंकि इसी वजह से मनुष्य को लोकप्रियता, महानता, दूसरों का प्रेम, सम्मान, आदि प्राप्त होता है। सहानुभूति व प्रेम से पूरे जग को जीता जा सकता है और इससे ईश्वर को भी वश में किया जा सकता है। जब महात्मा बुद्ध ने मनुष्यता की भलाई के लिए पुरानी परंपराओं को तोड़ा था, तब उनका भी विरोध हुआ था लेकिन जब उन्होंने प्रेम, करुणा और दया का प्रवाह किया, तब संपूर्ण मनुष्य-जाति उनके सामने नतमस्तक हो गई। इसलिए जो व्यक्ति दूसरों के प्रति सहानुभूति व प्रेम की भावना रखता है, वही सच्चा उदार व्यक्ति होता है।

2. रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित्त में,
सनाथ जान आपको करो न गर्व चित्त में।
अनाथ कौन है यहाँ? त्रिलोकनाथ साथ हैं,
दयालु दीनबंधु के बड़े विशाल हाथ हैं।

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कहा है कि मनुष्य को कभी भी अपने धन व संपत्ति पर घमंड नहीं करना चाहिए और अपने धन के कारण गर्व से अंधा नहीं होना चाहिए क्योंकि धन-संपत्ति नश्वर है। मनुष्य को स्वयं को सनाथ जान कर कभी भी अहंकार नहीं करना चाहिए क्योंकि इस धरती पर अनाथ कोई नहीं है। ईश्वर ही सबसे बड़े दयालु, दीनबंधु है, जो हर व्यक्ति पर अपनी दया-दृष्टि बनाए रखते हैं। ईश्वर के लिए सभी मनुष्य एक समान है और उनकी कृपा सभी पर बनी रहती है, इसलिए मनुष्य को अपने मन में कभी भी अहंकार, छल, कपट, लोभ, ईर्ष्या, द्वेष, आदि को जगह नहीं देनी चाहिए।

3. चलो अभीष्ट मार्ग में सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति, विघ्न जो पड़ें उन्हें ढकेलते हुए।
घटे न हेलमेल हाँ, बढ़े न भिन्नता कभी,
अतर्क एक पंथ के सतर्क पंथ हों सभी।

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कहा है कि मनुष्य को अपने निर्धारित किए हुए पथ पर हंसते-खेलते, प्रसन्नतापूर्वक निरंतर चलते रहना चाहिए और अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को हटाते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। परंतु इस सबमें आपसी-सामंजस्य व मेल-जोल कभी भी कम नहीं होना चाहिए और भेदभाव नहीं बढ़ना चाहिए, क्योंकि सभी मनुष्य

इस अनजान सफर के सतर्क यात्री है और सभी को एक-न-एक दिन अपनी मंजिल पर पहुंचना ही है। अतः सभी को एक होकर चलना चाहिए और परस्पर भाईचारे की भावना रखनी चाहिए।

पर्वत प्रदेश में पावस

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- पावस ऋतु के समय प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन आते हैं-

(क). प्रकृति पल-पल परिवर्तित होती रहती है।

(ख). करधनी के समान, दूर तक फैली पर्वतीय श्रंखला पर खिले हजारों फूल ऐसे प्रतीत होते है, मानो पर्वत अपनी पुष्प-रूपी आंखों से आसमान को निहार रहा है।

(ग). पर्वत के चरणों में फैला तालाब दर्पण के समान दिखाई पड़ता है।

(घ). मोती की लड़ियों के समान प्रतीत होने वाले झाग से भरे झरने, पहाड़ का गौरव गाते हुए बहते है।

(ड़). पर्वत पर उगे ऊंचे-ऊंचे पेड़ चिंतित दृष्टि से आसमान को निहारते है।

(च). बादलों के पीछे छिपे पर्वत ऐसे प्रतीत होते है, मानो पंख लगा कर कहीं उड़ गए हो।

(छ). ताल से उठता हुआ कोहरा, आग लगने से उठते हुए धुएं की तरह प्रतीत होता है।

(ज). इधर-उधर तेजी से घूमते बादलों को देखकर ऐसा लगता है, मानो जलद-यान में बैठकर इंद्र-देवता घूम रहे हो और अपनी जादूगरी कहां प्रदर्शन कर रहे हो।

2. 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है?

उत्तर:- 'मेखलाकार'शब्द का अर्थ है, करधनी के आकार का अर्थ अर्थ कमरबंद के जैसा। कवि ने यह शब्द दूर-दूर तक फैली, लंबी पर्वतीय श्रृंखला के लिए प्रयुक्त किया है; क्योंकि बहुत दूर तक फैली हुई पर्वतीय श्रृंखला पृथ्वी के कमरबंद जैसी प्रतीत हो रही थी। कवि ने यह शब्द कविता का सौंदर्य बढ़ाने और प्रकृति के सौंदर्य का सहज वर्णन करने के लिए किया है।

3. 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा?

उत्तर:- 'सहस्त्र दृग-सुमन' से कवि ने हजारों पुष्प रूपी आंखों को दर्शाया है। प्रस्तुत कविता में कवि ने इस पद का प्रयोग पहाड़ पर खिले हजारों फूलों के लिए किया है, जिनका मुख आकाश की ओर है। कवि ने पुष्पों में पर्वत की आंखों की कल्पना की है और कवि को ऐसा प्रतीत होता है, मानो पर्वत अपनी हजारों पुष्प रूपी आंखों से आकाश को निहार रहा है।

4. कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर:- प्रस्तुत कविता में कवि ने तालाब को दर्पण के समान बताया है क्योंकि तालाब का जल अत्यंत स्वच्छ और निर्मल होता है, जिसमें अपना प्रतिबिंब आसानी से देखा जा सकता है। जिस प्रकार दर्पण में हम अपना प्रतिबिंब देखते है, उसी प्रकार पर्वत भी तालाब में अपना प्रतिबिंब देखता-सा जान पड़ता है। कविता में कवि ने प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन किया है और उसे बढ़ाने के लिए उपरोक्त रूपक अलंकार का प्रयोग किया है।

5. पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर क्यों देख रहे थे और वे किस बात को प्रतिबिंबित करते हैं?

उत्तर:- पर्वत के हृदय से उठकर ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश की ओर देख रहे थे क्योंकि वे उसकी ऊंचाइयों को छूने की आकांक्षा रखते थे। वे वृक्ष मनुष्य के हृदय की उच्चाकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करते है और यह संदेश देते है कि मनुष्य को निरंतर अपने लक्ष्य

पर नजर टिकाये रखनी चाहिए और बिना लक्ष्य की ऊंचाई की परवाह किए, उसकी ओर अग्रसर रहना चाहिए। अपने मन की आकांक्षाओं को करने के लिए स्थिर मन व एकाग्रता आवश्यकता होती है।

6. शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए?

उत्तर:- शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में धंस गए क्योंकि तेज वर्षा के कारण ऐसा लग रहा था, जैसे आसमान धरती पर टूट पड़ा हो। तालाबों से उठता हुआ कोहरा ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो पूरे पर्वत पर आग लग गई हो और उसमें से धुआं निकल रहा हो। वर्षा का ऐसा प्रचंड रूप देखकर पर्वत के हृदय से उठे उच्चाकांक्षाओं के समान ऊंचे-ऊंचे पेड़ भयभीत हो गए।

7. झरने किसके गौरव का गान कर रहे हैं? बहते हुए झरने की तुलना किससे की गई है?

उत्तर:- झड़ने ऊंचे पर्वत के गौरव का गान कर रहे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे नस-नस में उत्तेजता लिए, मस्ती में बहते झरने पर्वत की महानता का गुणगान कर रहे हैं।

झाग से भरे बहते झरने मोतियों की लड़ियों जैसे प्रतीत हो रहे हैं।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. है टूट पड़ा भू पर अंबर

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में कवि ने पर्वत प्रदेश में आई मूसलाधार वर्षा का वर्णन किया है और उपरोक्त पंक्ति में बताया है कि वर्षा इतनी तेज और भीषण गर्जना के साथ हो रही है कि ऐसा लग रहा है, जैसे आसमान धरती पर टूट पड़ा हो।

2. यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कहा है कि इधर-उधर घूमते बादलों को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे वर्षा के देवता, इंद्रदेव बादलों पर सवार होकर इधर-उधर घूम रहे हैं और पल-पल प्रकृति में परिवर्तन लाकर अपना जादुई करतब दिखा रहे हैं।

3. गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

उत्तर:- जिस प्रकार मनुष्य के मन में बड़ी-बड़ी आकांक्षाएं उठती है, उसी प्रकार पर्वत के हृदय से भी आकाश को छूने की उच्चाकांक्षाओं के समान उठे, ऊंचे-ऊंचे पेड़ चिंतित होकर नीले नभ को निहार रहे हैं।

तोप

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. विरासत में मिली चीजों की बड़ी सँभाल क्यों होती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- विरासत में मिली चीज़ों की बड़ी संभाल इसलिए होती है, क्योंकि वे हमारे पूर्वजों से जुड़ी हुई होती है। इस कारण हमारा उनके साथ बहुत ही आत्मीय और भावनात्मक संबंध होता है। ये चीजें हमें इतिहास के बारे में बताती है और हमें इतिहास में

की गई गलतियों के बारे में चेतावनी देती है। विरासत में मिली हुई चीजों से सही दिशानिर्देश मिलते है, जिससे मनुष्य के अच्छे भविष्य के लिए सही और मजबूत नींव बनता है।

2. इस कविता से आपको तोप के विषय में क्या जानकारी मिलती है?

उत्तर:-इस कविता में हमें तोप के विषय में जानकारी मिलती है कि वह अंग्रेज़ों के समय की तोप है, जिसे अंग्रेजों ने स्वतंत्रता संग्राम के समय प्रयोग किया था। 1857 में हुए युद्ध में उसे हथियार के रुप में प्रयोग किया था। उससे अनेक योद्धाओं को मारा गया था; लेकिन अब उस ताकतवर और क्रूर तोप को मुँह बन्द हो गया है। अब यह मात्र एक प्रदर्शन-वस्तु है। बच्चे उसपर बैठकर सवारी करते है और चिड़िया उसपर चहचहाती है। अंत: यह तोप हमें बताती है कि कोई कितना भी ताकतवर क्यों न हो, एक-न-एक दिन वह धराशाही हो ही जाता है।

3. कंपनी बाग में रखी तोप क्या सीख देती है?

उत्तर:- कंपनी बाग में रखी तोप हमें बताती है कि बुराई चाहे कितनी भी बड़ी क्यों ना हो, अच्छाई उसे खत्म कर ही देती है; और कोई कितना भी शक्तिशाली क्यों ना हो, अंत में वह धराशाही हो ही जाता है। कंपनी बाग में रखी तोप हमें हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाती है, उनके द्वारा किए हुए संघर्ष का वर्णन करती है और उनके बताए रास्ते पर चलने की सीख देती है।

4. कविता में तोप को दो बार चमकाने की बात की गई है। ये दो अवसर कौन-से होंगे?

उत्तर:- हमारा आजादी दिवस, 15 अगस्त और गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी ऐसे दो अवसर है, जब हमारा पूरा देश अपनी आजादी और अंग्रेजों पर मिली जीत का जश्न मनाता है और अपने सभी वीर स्वतंत्रता सेनानियों को याद करता है। प्रस्तुत कविता में जिस तोप का वर्णन हुआ है, वह हमारी आजादी और विजय को दर्शाती है; इसलिए इन दोनों खास अवसरों पर कंपनी बाग को सजाया जाता है और तोप को चमकाया जाता है।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. अब तो बहरहाल
छोटे लड़कों की घुड़सवारी से अगर यह फ़ारिग हो
तो उसके ऊपर बैठकर
चिड़ियाँ ही अकसर करती हैं गपशप।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने तोप पर व्यंग्य किया है कि किसी जमाने में जो तोप वीर योद्धाओं के धज्जियां उड़ा देती थी, आज वह मात्र एक खिलौना और प्रदर्शन-वस्तु रह गई है। छोटे बच्चे उसपर घुड़सवारी करते है और चिड़ियाएं उसपर बैठकर आपस में बातें करती है व चहचहाती है।

2. वे बताती हैं कि दरअसल कितनी भी बड़ी हो तोप
एक दिन तो होना ही है उसका मुँह बंद।

उत्तर:- प्रस्तुत कविता में कवि ने तोप का उदाहरण देकर यह बताया है कि कोई चाहे जितना भी ताकतवर और शक्तिशाली हो, अंत में वह धराशाही हो ही जाता है और बुराई चाहे जितनी भी बड़ी और ताकतवर हो, अच्छाई के हाथों उसका अंत हो ही जाता है।

3. उड़ा दिए थे मैंने। अच्छे-अच्छे सूरमाओं के धज्जे

उत्तर:- इन पंक्तियों में कवि ने तोप की क्रूरता का वर्णन किया है और बताया है कि उस तोप का प्रयोग स्वतंत्रता संग्राम के समय हथियार के रुप में हुआ था और उससे अनगिनत वीर योद्धाओं को मार गिराया गया था। यहां कवि ने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचारों की तरफ इशारा किया है।

कर चले हम फ़िदा

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. क्या इस गीत की कोई ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है?

उत्तर:- हां, इस गीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। प्रस्तुत गीत भारत-चीन की ऐतिहासिक लड़ाई, जिसमें भारत के वीर सिपाहियों ने उनका बड़ी ही बहादुरी से मुकाबला किया था, पर आधारित, चेतन आनंद द्वारा बनाई गई फिल्म 'हकीकत' से लिया गया है।

2. 'सर हिमालय का हमने न झुकने दिया', इस पंक्ति में हिमालय किस बात का प्रतीक है?

उत्तर:- हिमालय को भारत देश के सिर का ताज माना जाता है और यह भारत के मान-सम्मान का प्रतीक है; जिसकी सुरक्षा के लिए यहां के जांबाज सिपाही अपना जीवन दांव पर लगा देते हैं। प्रस्तुत गीत भारत-चीन के ऐतिहासिक युद्ध पर लिखा गया है, जो हिमालय की बर्फीली चोटियों पर लड़ा गया था। इसलिए इसमें एक वीर सिपाही शहीद होने से पहले अपने साथियों को कहता है कि हमने अपनी जान लगा दी, लेकिन दुश्मन के आगे हिमालय का सर अर्थात् भारत का सर नहीं झुकने दिया।

3. इस गीत में धरती को दुल्हन क्यों कहा गया है?

उत्तर:- इस गीत में धरती को दुल्हन इसलिए कहा है क्योंकि इस युद्ध के दिन कई वीर सिपाहियों ने अपनी जान गंवाई थी और उनके खून से धरती लाल होकर दुल्हन की तरह सजी हुई प्रतीत हो रही थी। जिस प्रकार दुल्हन की रक्षा करना दूल्हे का कर्तव्य होता है, उसी प्रकार मातृभूमि की रक्षा करना हर सिपाही का धर्म होता है और इसीलिए धरती यानी अपनी दुल्हन की रक्षा करते हुए उन्होंने अपनी जान गवां दी।

4. गीत में ऐसी क्या खास बात होती है कि वे जीवन भर याद रह जाते हैं?

उत्तर:- गेयता, संगीतात्मकता, लयबद्धता, आदि तो हर गीत की खासियत होती है, लेकिन जिन गीतों में दिल को छू लेने वाले, भावनात्मक, जीवन से जुड़े हुए, मार्मिक, सच्चे और आत्मीय बोल होते हैं, वे गीत जीवन भर याद रहते हैं। प्रस्तुत गीत 'कर चले हम फ़िदा' में वीर सिपाहियों के मन की भावनाएं स्पष्ट रुप से झलकती है। यह गीत सिपाहियों के मन में बसी बलिदान और स्नेह की भावना को बड़े ही लयबद्ध और सहज रूप से प्रकट करता है; इसलिए यह किसी व्यक्ति-विशेष का गीत न बनकर भारत के सभी लोगों का गीत बन गया है।

5. कवि ने 'साथियों' संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

उत्तर:- कवि ने "साथियों" संबोधन का प्रयोग अपने सैनिक-साथियों व बाकी देशवासियों के लिए किया है। उन्होंने सभी देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा है कि मातृभूमि की रक्षा के लिए हमने अपने प्राणों का बलिदान कर दिया है और अब इसकी रक्षा की जिम्मेदारी तुम सब की है। कवि ने सभी देशवासियों को एकजुट होकर, डटकर दुश्मन का मुकाबला करने के लिए प्रोत्साहित किया है।

6. कवि ने इस कविता में किस काफ़िले को आगे बढ़ाते रहने की बात कही है?

उत्तर:- कवि ने इस कविता में देश की रक्षा करने वाले सैनिकों के समूह के लिए काफ़िले शब्द का प्रयोग किया गया है। अपने देश की रक्षा के लिए शहीद होना बड़े ही गर्व की बात होती है और इसलिए कवि चाहता है कि उनके शहीद होने के बाद भी बलिदान का रास्ता हमेशा प्रगतिशील रहे और देश के लिए अपना जीवन कुर्बान करने वालों के काफ़िले हमेशा आगे बढ़ते रहे।

7. इस गीत में 'सर पर कफ़न बाँधना' किस ओर संकेत करता है?

उत्तर:- प्रस्तुत गीत में 'सर पर कफ़न बांधना' वाक्यांश का प्रयोग उन बहादुर सिपाहियों के लिए किया है, जो मौत से भी नहीं डरते, अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राण दांव पर लगा देते हैं और निडर होकर दुश्मन का सामना करते हैं।

8. इस कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर:- प्रस्तुत गीत सन 1962 के भारत-चीन के ऐतिहासिक युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म 'हकीकत' के लिए लिखा गया था। कवि इसके द्वारा संपूर्ण देश को प्रोत्साहित करना चाहता है। उस समय चीन ने तिब्बत की ओर से आक्रमण किया था। भारत के बहादुर सिपाहियों ने इस आक्रमण का मुकाबला बड़ी ही वीरता से किया था। इस गीत के माध्यम से कवि ने उन वीर सिपाहियों के मन में बसे देशप्रेम और बलिदान की भावना को व्यक्त किया है। उन्होंने देश की सुरक्षा के लिए अपनी जान गवां दी है और जाने से पहले वे अपने साथियों को कह रहे हैं कि अब देश की सुरक्षा की जिम्मेदारी तुम्हारी है और तुम्हें भी निडर होकर अपना सर्वस्व देश पर न्योछावर करना होगा व इसके मान सम्मान की रक्षा करनी पड़ेगी।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. साँस थमती गई, नब्ज़ जमती गई

फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भारत के वीर सैनिकों के जज्बे और साहस की सराहना की है। उन्होंने अपनी अंतिम साँस तक देश की रक्षा की। हिमालय की उस बर्फ़ीली ठंड में उनकी सांसें थमने लग गई थी और खून व नसें जमने लग गई थी, लेकिन फिर भी वे इन सबकी परवाह किए बिना आगे बढ़ते रहे, दुश्मनों का डटकर मुकाबला किया और देश के मान-सम्मान के लिए हँसते-हँसते अपने प्राण न्योछावर करते गए।

2. खींच दो अपने खूँ से ज़मीं पर लकीर

इस तरफ़ आने पाए न रावन कोई

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने भारत के वीर सैनिकों को प्रोत्साहित करते हुए कहा है कि जिस प्रकार लक्ष्मण ने सीताजी को रावण से बचाने के लिए लक्ष्मणरेखा बनाई थी, उसी प्रकार तुम्हें भी रावण-रूपी शत्रुओं से अपनी मातृभूमि को बचाने के लिए शहीद होकर, अपने खून से लक्ष्मण-रेखा बनानी पड़ेगी।

3. छू न पाए सीता का दामन कोई

राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों

उत्तर:- कवि वीर सिपाहियों को कह रहा है कि भारत-भूमि का सम्मान सीताजी की पवित्रता के समान है और तुम्हें अपने प्राणों को कुर्बान करके अपनी मातृभूमि के सम्मान की रक्षा, राम और लक्ष्मण की तरह करनी पड़ेगी। अत: राम तथा लक्ष्मण- दोनों का कर्तव्य हमें ही निभाना है और हमें इतना सक्रिय होकर यह काम करना होगा कि कोई भी दुश्मन देश की सीमा में प्रवेश न कर सके।

भाषा-अध्ययन

1. इस गीत में कुछ विशिष्ट प्रयोग हुए हैं। गीत के संदर्भ में उनका आशय स्पष्ट करते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

कट गए सर, नब्ज़ जमती गई, जान देने की रुत, हाथ उठने लगे।

उत्तर:- (क). युद्ध के समय सैकड़ों सैनिकों के सर कट गए।

(ख). एवरेस्ट की बर्फीली वादियों में नब्ज़ जमा देने वाली कड़ाके की ठंड होती है।

(ग). सैनिकों के लिए युद्ध का समय, जान देने की रुत के समान होता है।

(घ). सभा में धीरे-धीरे सबके हाथ श्याम के पक्ष में उठ गए।

आत्मत्राण

पद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. कवि किससे और क्या प्रार्थना कर रहा है?

उत्तर:- प्रस्तुत कविता में कवि करुणामय ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि चाहे प्रभु उन्हें विपत्तियों से दूर ना रखें, लेकिन उन्हें इतनी शक्ति प्रदान करें कि वे उन विपत्तियों का निडर होकर सामना कर सकें। ऐसी मुश्किल घड़ी में भी उनका स्वयं पर और ईश्वर पर विश्वास बना रहे।

2. 'विपदाओं से मुझे बचाओं, यह मेरी प्रार्थना नहीं' – कवि इस पंक्ति के द्वारा क्या कहना चाहता है?

उत्तर:- जिस प्रकार आग का तप कच्चे घड़े को पक्का और मजबूत बनाता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाएं, संकट और दुःख उसे परिपक्व बनाते हैं; इसीलिए कवि ने इस पंक्ति द्वारा ईश्वर से प्रार्थना की है, कि ईश्वर उन्हें संकटों और विपत्तियों से नए बचाए, लेकिन उन्हें जीवन की उन रुकावटों का निडर होकर सामना करने की शक्ति प्रदान करें, ताकि उनका हौसला और आत्मविश्वास कभी न डगमगाए।

3. कवि सहायक के न मिलने पर क्या प्रार्थना करता है?

उत्तर:- अनुकूल परिस्थितियों में सहायक के न मिलने पर कवि ने ईश्वर से विनती करी है की ऐसी परिस्थितियों में भी उसका बल-पौरुष न डगमगाए, उसके मन में कभी संकोच जगह न बना पाए, उसका आत्मविश्वास और ईश्वर के प्रति आस्था हमेशा बनी रहे व वह निडर होकर और धैर्यपूर्वक उन विपरीत परिस्थितियों में भी खड़ा रहे।

4. अंत में कवि क्या अनुनय करता है?

उत्तर:- कविता के अंत में कवि ने ईश्वर से अनुनय किया है कि प्रभु उन्हें इतनी आत्मशक्ति प्रदान करें कि वे निडर होकर व धैर्यपूर्वक हर विपरीत परिस्थिति का सामना कर सकें; अपने अच्छे दिनों में भी हर क्षण ईश्वर को स्मरण करते रहे और दुःख की ऐसी परिस्थिति में जब पूरी दुनिया उनका साथ छोड़ दे व उनको धोखा दे जाए, तब भी उनके मन में ईश्वर के प्रति विश्वास और आस्था बनी रहे।

5. आत्मत्राण शीर्षक की सार्थकता कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत कविता आत्मत्राण का शीर्षक संपूर्ण रूप से सार्थक है, क्योंकि आत्मत्राण का अर्थ होता है- आत्मा या मन के भय का निवारण और इस कविता में कवि ने करुणामय ईश्वर से विनती की है कि वे उसे जीवन में आने वाली हर बाधा, विपत्ति और आपदा से पूरे आत्मविश्वास के साथ व धैर्यपूर्वक लड़ने की क्षमता प्रदान करें। प्रभु उन्हें हर दुःख सहने का आत्मबल प्रदान करें, ताकि उसका स्वयं पर से और ईश्वर पर से विश्वास कभी ना डगमगाए।

6. अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए आप प्रार्थना के अतिरिक्त और क्या-क्या प्रयास करते हैं? लिखिए।

उत्तर:- अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के अतिरिक्त हम कड़ी मेहनत और संघर्ष करते हैं। जब तक सफलता हासिल नहीं हो जाती, तब तक निरंतर प्रयास करते रहते हैं और धैर्यपूर्वक परिणाम का इंतजार करते हैं। अगर परिणाम हमारे पक्ष में नहीं होता, तो आत्मविश्वास ना खोकर अपनी गलतियां सुधारकर दोबारा प्रयत्न करते हैं।

7. क्या कवि की यह प्रार्थना आपको अन्य प्रार्थना गीतों से अलग लगती है? यदि हाँ, तो कैसे?

उत्तरः- प्रस्तुत कविता अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है क्योंकि अन्य प्रार्थना गीत प्रभु की भक्ति, आत्म-समर्पण, जीवन से सभी दुःख-दर्दों को दूर करके सुख-समृद्धि, कल्याण, शांति मानवता के विकास, आदि पर आधारित होते हैं, लेकिन इस कविता में दुखों से छुटकारा नहीं बल्कि दुखों को सहने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना की गई है। इस कविता में ईश्वर में आस्था बनाएं रखने और कर्मशील बने रहने की प्रार्थना की गई। इस कविता में किसी सांसारिक या भौतिक सुख की कामना नहीं की गई है।

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

1. नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कहा है कि वह सुख की परिस्थितियों और दुःख की परिस्थितियों- दोनों में ही ईश्वर के प्रति समान रूप से आस्था और विश्वास बनाए रखना चाहता है। वह सुख के दिनों में भी हर पल ईश्वर का स्मरण करना चाहता है और चाहता है कि दुःख के पल में भी कभी उसे अपने ईश्वर पर संदेह ना हो।

2. हानि उठानी पड़े जगत् में लाभ अगर वंचना रही
तो भी मन में ना मानूँ क्षय।

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने कहा है कि चाहे उसे जीवन में लाभ मिले या हानि मिले, लेकिन उसका आत्मविश्वास हमेशा बना रहे और मनोबल कभी न डगमगाए। वह कभी परिस्थितियों से हार न माने और हर परिस्थिति का सामना धैर्यपूर्वक एवं आत्मविश्वास के साथ कर सके।

3. तरने की हो शक्ति अनामय
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।

उत्तरः- प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने ईश्वर से प्रार्थना की है कि चाहे ईश्वर उन्हें सांत्वना देकर, उनके दुख-दर्दों का भार कम ना करें; लेकिन उन्हें इतना आत्मबल और शक्ति प्रदान करें, ताकि वे खुद बिना हार माने, निरंतर प्रगतिशील रहें और इस संसार-रूपी भवसागर को पार कर सकें।

बड़े भाई साहब

गद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

उत्तर:- कथा नायक की रुचि मैदान में कंकरिया उछालने, कागज की तितलियां उड़ाने, मैदान की चारदीवारी पर चढ़कर नीचे कूदने, उसके फाटक पर सवार होकर उसकी मोटरकार चलाने, फुटबॉल, कबड्डी, वॉलीबॉल, आदि खेलने में थी। मैदान की सुखद हरियाली और हवा के हल्के-हल्के झोंके उनको आनंदित करते थे।

2. बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

उत्तर:- जब भी लेखक कहीं बाहर से आते थे, तब बड़े भाई साहब का उनसे हमेशा एक ही सवाल होता था- 'कहां थे?'

3. दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर:- दूसरी बार पास होने पर छोटा भाई पहले से अधिक स्वच्छंद और घमंडी हो गया था। वह बड़े भाई की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाकर अपनी मनमानी करने लगा था।

4. बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे?

उत्तर:- बड़े भाई साहब छोटे भाई से पांच साल बड़े थे, लेकिन केवल तीन दरजे आगे थे। बड़े भाई की उम्र चौदह साल थी और छोटे भाई की नौ साल थी, लेकिन फिर भी बड़े भाई नौवीं कक्षा में थे और छोटे भाई पांचवी में।

5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर:- बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए अपनी कॉपी व किताबों के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों व बिल्लियों की तस्वीरें बनाया करते थे। कभी-कभी एक ही नाम, शब्द या वाक्य को दस-बीस बार लिखते थे। कभी एक ही शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते थे और कभी ऐसी शब्द-रचना करते थे, जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 पक्तियों में) लिखिए-

1. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर:- छोटे भाई ने बड़े भाई की लताड़ सुनकर दृढ़-निश्चय कर लिया कि वह अब मन लगाकर पढ़ाई करेगा, खूब मेहनत करके अच्छे अंक प्राप्त करेगा और बड़े भाई साहब को शिकायत का मौका नहीं देगा। इस सोच के साथ वह पढ़ाई का टाइम-टेबल बनाता है; लेकिन पहले ही दिन खेलकूद लिप्त होकर उसकी अवहेलना शुरू कर देता है।

2. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर:- एक दिन छोटे भाई के दिनभर गुल्ली-डंडा खेलने पर बड़े भाई साहब ने उसे आड़े हाथों ले लिया। उन्होंने उसे रावण का उदाहरण देकर कहा कि कक्षा में अव्वल आने पर इतना घमंड करने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि छोटी कक्षा में अव्वल आना बहुत आसान है और अगर उसे पढ़ाई-लिखाई न करके ऐसे गुल्ली-डंडा ही खेलना है तो वह अपने दादा की गाढ़ी कमाई को व्यर्थ न बहाकर गांव लौट जाए।

3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

उत्तर:- बड़े भाई साहब पर बड़ा भाई होने की जिम्मेदारी थी और वे अपने छोटे भाई को कोई भी गलत उदाहरण नहीं देना चाहते थे। वे उसके सामने स्वयं को एक आदर्शवादी और सभ्य व्यक्ति के रूप में चित्रित करना चाहते थे, क्योंकि छोटे भाई-बहन बड़ों को देखकर ही सीखते हैं।

4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

उत्तर:- बड़े भाई समय-समय पर छोटे भाई को डांट-फटकार लगाते रहते थे और उसे मेहनत व परिश्रम करने की सलाह देते थे। वे उसे कक्षा में अव्वल आने पर अभिमान न करने व खेल-कूद से मन हटाकर, कठिन परिश्रम करने को कहते हैं।

5. छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया?

उत्तर:- छोटे भाई ने बड़े भाई के नरम व्यवहार और उनकी सहिष्णुता का अनुचित फायदा उठाना शुरू कर दिया। पहले की अपेक्षा छोटे भाई का अभिमान और आत्मसम्मान बढ़ गया। उसके मन से बड़े भाई साहब का डर और आतंक खत्म हो गया था, इसलिए अब वह पढ़ने-लिखने की बजाय हर समय खेलने-कूदने में लगा रहता था। उसे लगने लगा था कि वह बिना पढ़े ही हमेशा की तरह परीक्षा में पास हो ही जाएगा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- मुझे लगता है कि छोटे भाई का कक्षा में अव्वल आना बड़े भाई की डांट-फटकार का ही परिणाम था, क्योंकि छोटे भाई को तो पढ़ाई-लिखाई में कोई रुचि नहीं थी। उसका मन तो सिर्फ अपने दोस्तों के साथ खेलने-कूदने, कंकर-पत्थर उछालने, घूमने फिरने और मेले-तमाशों में लगता था। छोटा भाई बड़े भाई के डर, पाबंदियों और रोक-टोक की वजह से एक-दो घंटे पढ़ाई कर लेता था, जिसके परिणामस्वरूप वह पास हो गया।

2. इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में लेखक द्वारा समूची शिक्षा पर किए गए व्यंग्य से हम पूरी तरह सहमत है, क्योंकि हमारे शिक्षा प्रणाली में व्यवहारिक ज्ञान को महत्व न देकर सिर्फ सैद्धांतिक और किताबी ज्ञान को महत्व दिया गया है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होता है व्यक्ति को समझदार, ज्ञानी, लायक और सभ्य बनाना। लेकिन वर्तमान शिक्षा नीति में रटंत विद्या पर जोर दिया जाता है और विद्यार्थी की बुद्धिमता को उसके अंको से मापा जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चों के संपूर्ण विकास पर जोड़ नहीं देती, जोकि उचित नहीं है।

3. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

उत्तर:- बड़े भाई के अनुसार जीवन की समझ किताबी ज्ञान से नहीं बल्कि तजुर्बे और अनुभव से आती है। हमारे बड़े बुजुर्गों को भले ही किताबी ज्ञान ना हो, लेकिन उनके पास जीवन का जो तजुर्बा है वह इस किताबी ज्ञान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है अपनी समझ को विकसित करना ताकि जीवन में आने वाली हर कठिनाई का सामना सूझ-बूझ और समझदारी से किया जा सके। अत: किताबी ज्ञान से व्यक्ति की सोच विकसित होती है और तजुर्बे अनुभव से जीवन की समझ आती है।

4. छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

उत्तर:- जब बड़े भाई साहब फेल हो गए और छोटा भाई अपने दर्जे में अव्वल आ गया, तब छोटे भाई को स्वयं पर अभिमान होने लगा की वह खेलते-कूदते भी पास हो गया। अपने इस घमंड के कारण उसके मन से बड़े भाई साहब का डर खत्म हो गया और उनके डर से वह जो थोड़ा बहुत पढ़ लिया करता था वह भी खत्म हो गया। अब वह हर समय सिर्फ खेलता-कूदता रहता था। बड़े भाई साहब ने उसकी इस मनोस्थिति को भांप लिया और उसे डांटते हुए जीवन के अनुभव का महत्व समझाया। उनकी बातें सुनने के बाद छोटे भाई को समझ आया कि उसका कक्षा में अव्वल आना बड़े भाई साहब की डांट-फटकार का ही नतीजा है। इस एहसास ने छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी।

5. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए?

उत्तर:- बड़े भाई साहब परिश्रमी और अध्ययनशील विद्यार्थी थे। वे हमेशा पढ़ाई-लिखाई में लगे रहते थे और कड़ी मेहनत करते थे। वे अपनी जिम्मेदारियों से भली-भांति परिचित थे और स्वयं की इच्छाओं और आकांक्षाओं को दबाकर, छोटे भाई के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को अच्छे से निभाते थे। वे बहुत ही समझदार और परिपक्व थे, उन्हें अनुभव और तजुर्बे से आने वाली जीवन की असली समझ का महत्व पता था; और इसलिए वह हमेशा अपने छोटे भाई को समझाते रहते थे।

6. बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से अनुभव को ज्यादा महत्वपूर्ण कहा है, क्योंकि किताबी ज्ञान और व्यवहारिकता में बहुत अधिक फर्क होता है। असली जिंदगी किताबों से बहुत अलग होती हैं, जो सिर्फ अनुभव और तजुर्बे से समझी जा सकती है। जिस प्रकार भट्टी का ताप कच्चे घड़े को पकाकर मजबूत बना देता है, उसी प्रकार जीवन में आने वाली विपरीत परिस्थितियां भी मनुष्य को परिपक्व बना देती है।

7. बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि-

(क). छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है।

(ख). भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है।

(ग). भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

(घ). भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

उत्तर:-

(क). प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि छोटा भाई बड़े भाई से डरता है और उनके डांटने पर कुछ नहीं बोलता, क्योंकि वह उनका आदर करता है। जब पतंग लूटते समय बड़े भाई साहब उसे पकड़ लेते हैं और डांट-फटकार लगाते हैं, तब उनकी बातें सुनकर उसे अपनी छोटी सोच का एहसास होता है और उसके मन में बड़े भाई साहब के प्रति आदर और सम्मान की भावना बढ़ जाती है।

(ख). बड़े भाई साहब हर वक्त पढ़ाई-लिखाई करते रहते थे और बेहद परिश्रमी थे। उन्हें इस चीज का एहसास था कि उनके दादा उनकी पढ़ाई के लिए बहुत अधिक मेहनत करते हैं। उन्हें अपने छोटे भाई के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भी भली-भांति एहसास था। वे अपने छोटे भाई को सही राह दिखाने के लिए अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं को दबा लेते थे। उन्हें अनुभव, तजुर्बे और जीवन की समझ का महत्व भी अच्छी तरह पता था। इन सबसे पता चलता है कि बड़े भाई साहब बहुत ही परिपक्व और समझदार थे।

(ग). जब बड़े भाई साहब लेखक को पतंग के पीछे भागते हुए देखते हैं, तब वे उसे समझाते हैं और पढ़ाई-लिखाई, ज्ञान, अनुभव व तजुर्बे का महत्व बताते हैं। वे उससे कहते हैं कि उनका भी मन होता है पतंगबाजी करने का और खेलने-कूदने का, लेकिन छोटे भाई के प्रति अपनी जिम्मेदारी की वजह से वे अपनी आकांक्षाओं और इच्छाओं को दबा देते हैं। यह सब कहकर वे उस पतंग को लेकर खुशी से दौड़ने लगते हैं। इससे हमें पता चलता है कि बड़े भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है।

(घ). जब भी छोटा भाई खेलने-कूदने और फालतू कामों में लगा रहता था, तब बड़े भाई साहब उसे डांटते थे और उसे जीवन में पढ़ाई-लिखाई व समय का महत्व समझाते थे। वे उसे हमेशा डराते-धमकाते रहते थे, ताकि वह उनके डर से पढ़-लिख ले और अपना समय व्यर्थ न गवांकर किसी काबिल बन जाए। इससे यह साफ ज़ाहिर होता है कि बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई का भला चाहते थे।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है, ज्ञान पाना और व्यक्ति की सोच-समझ व बुद्धि का विकास, ना कि सिर्फ अच्छे अंक लाकर इम्तिहान पास कर लेना। शिक्षा द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान को व्यवहार में लाने और अनुभव के द्वारा बुद्धि का सही विकास किया जा सकता है।

2. फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुडकियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

उत्तर:- इन पंक्तियों में लेखक कहना चाहता है कि व्यक्ति के जीवन में चाहे कैसी-भी परिस्थितियां आ जाए, लेकिन वह अपना व्यक्तिगत स्वभाव और मोह नहीं छोड़ सकता। ठीक इसी प्रकार बड़े भाई से डांट-फटकार खाने के बावजूद भी छोटा भाई फिर खेलने-कूदने चला जाता था।

3. बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियां लेखक के बड़े भाई ने कही थी; जिनका तात्पर्य है कि जिस प्रकार मकान की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती है और मजबूत भवन, पुख्ता बुनियाद का ही परिणाम होता है, उसी प्रकार अच्छे भविष्य के लिए शिक्षा की पुख्ता बुनियाद अनिवार्य होती है।

4. आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों का आशय है कि लेखक पतंग लूटने में इतना मंत्र-मुग्ध था कि दुनिया से बेखबर होकर वह लगातार उस पर नजरें गड़ाए आसमान की ओर मुख करते हुए दौड़ता चला जा रहा था, जिससे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह अपने-आप ही पतंग की और खींचता चला जा रहा है।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –

नसीहत, रोष, आजादी, राजा, ताज़ुब्ब।

उत्तर:-

नसीहत – सलाह, उपदेश।

रोष – गुस्सा द्वेष।

आजादी – स्वतंत्रता, स्वाधीनता।

राजा – शासक, बादशाह।

ताज़ुब्ब – आश्चर्य, हैरानी।

2. प्रेमचंद की भाषा बहुत पैनी और मुहावरेदार है। इसीलिए इनकी कहानियाँ रोचक और प्रभावपूर्ण होती हैं। इस कहानी में आप देखेंगे कि हर अनुच्छेद में दो-तीन मुहावरों का प्रयोग किया गया है।

निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

सिर पर नंगी तलवार लटकना, आड़े हाथों लेना, अंधे के हाथ बटेर लगना, लोहे के चने चबाना, दाँतों पसीना आना, ऐरा-गैरा नत्थू खैरा।

उत्तर:-

(क). परीक्षा के दिन ऐसे लगते मानो सिर पर नंगी तलवार लटक रही हो।

(ख). कुछ देर तक तो भूषण उनकी बातें सुनता रहा लेकिन, फिर उसने उन्हें आड़े हाथों लेना शुरु किया तो उनके पसीने छुड़वा दिए।

(ग). सुधीर कम्प्यूटर नहीं जानता, फिर भी उसके पिता ने उसे नया कम्प्यूटर दिला दिया। ये तो वही बात हुई कि 'अंधे के हाथ बटेर लगना'।

(घ). राणा प्रताप को हराने के लिए अकबर को लोहे के चने चबाने पड़े थे।

(ङ). क्रिकेट के मैदान में से कुत्तों को बाहर खदेड़ने में माली को दाँतों पसीना आ गया।

(च). राम को हराना किसी भी ऐरे गैरे नत्थू खैरे के बस की बात नहीं है।

3. निम्मलिखित तत्सम, तद्भव, देशी, आगत शब्दों को दिए गए उदाहरणों के आधार पर छाँटकर लिखिए।

तालीम, जल्दबाजी, पुख्ता, हाशिया, चेष्टा, जमात, हर्फ़, सूक्तिबाण, जानलेवा, आँखफोड, घुडकियाँ, आधिपत्य, पन्ना, मेला-तमाशा, मसलन, स्पेशल, स्कीम, फटकार, प्रात :काल, विद्वान, निपुण, भाई साहब, अवहेलना, टाइम-टेबिल।

उत्तर:-

तत्सम शब्द – चेष्टा, निपुण, अवहेलना, प्रातः काल, आधिपत्य, सूक्तिबाण, विद्वान, अवहेलना।

तद्भव शब्द – घुडकियां, पन्ना।

देशज शब्द – जानलेवा, आंखफोड़, मेला-तमाशा, फटकार, भाई साहब।

आगत शब्द – तालीम, जल्दबाजी, हाशिया, स्पेशल, टाइम-टेबल, पुख्ता, स्कीम, जमात, हर्फ़, तमाशा, मसलन।

4. नीचे दिए वाक्यों में कौन-सी क्रिया है- सकर्मक या अकर्मक? लिखिए-

(क) उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया।

(ख) फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा।

(ग) शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा।

(घ) मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता।

(ङ) समय की पाबंदी पर एक निबंध लिखो।

(च) मैं पीछे – पीछे दौड़ रहा था।

उत्तर:-

(क). सकर्मक

(ख). सकर्मक

(ग). सकर्मक

(घ). सकर्मक

(ड़). सकर्मक

(च). अकर्मक

5. 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए-

विचार, इतिहास, संसार, दिन, नीति, प्रयोग, अधिकार।

उत्तर:-

विचार – वैचारिक

इतिहास – ऐतिहासिक

संसार – सांसारिक

दिन – दैनिक

नीति – नैतिक

प्रयोग – प्रायोगिक

अधिकार – अधिकारिक

डायरी का एक पन्ना

गद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

उत्तर:- कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि एक वर्ष पूर्व इसी दिन सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और इस वर्ष उसकी पुनरावृति थी, जिसके लिए काफी तैयारियां की गई थी।

2. सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उत्तर:- सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्व उदास पर था, जिसे पुलिस ने पकड़ लिया था।

3. विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर:- विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और वहां मौजूद लोगों पर लाठियां बरसाना शुरू कर दिया।

4. लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उत्तर:- लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय झंडा पहराकर अंग्रेजी सरकार के सामने अपनी खुशी और उत्साह का प्रदर्शन करते हैं और उनको यह दिखाना चाहते हैं कि अब वे आजाद है और अब अंग्रेज उन पर हुकूमत नहीं कर सकते।

5. पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

उत्तर:- पुलिस ने बड़े-बड़े पार को और मैदानों को इसलिए घेर लिया क्योंकि उस दिन पूरा देश अपनी स्वतंत्रता का जश्न मनाने जा रहा था और जगह-जगह जनसभाएं और झंडारोहण होने वाला था, जिसे पुलिस रोकना चाहती थी।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गई?

उत्तर:- 26 जनवरी 1931 से के दिन को अमर बनाने के लिए बहुत-सी तैयारियां की गई थी। सिर्फ प्रचार पर दो हजार रुपए खर्च कर दिए गए थे और सभी कार्यकर्ताओं को घर-घर जाकर उनका काम समझाया था। प्रत्येक मकान व इमारत पर झंडा फहरा रहा था और कलकत्ता के हर भाग को सजाया गया था। जगह-जगह लोग जुलूस निकाल रहे थे।

2. 'आज जो बात थी वह निराली थी' – किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि 26 जनवरी 1931 को जिस हर्षोल्लास और जज्बे के साथ लोगों ने स्वतंत्रता दिवस मनाया था, उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें स्वतंत्रता में मिल ही गई हो। लोगों ने बहुत बड़े पैमाने पर जुलूस निकाला था और सरकार का बहिष्कार करके मोनूमेंट पर झंडा फहराया था।

3. पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उत्तर:- पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाला था कि कोई भी सभा नहीं हो सकती और कोई भी जुलूस नहीं निकाला जाएगा। यह नोटिस जनता को डराने और उन्हें काबू में करने के लिए निकाला गया था। वही कौंसिल ने नोटिस निकाला कि चार बजकर चौबीस मिनट पर मॉनुमेंट पर झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। यह नोटिस कानून तोड़कर अंग्रेजी सरकार का बहिष्कार करने के लिए निकाला गया था।

4. धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

उत्तर:- धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस इसलिए टूट गया था क्योंकि पुलिस ने लोगों पर लाठियां बरसाना शुरू कर दिया था, बहुत से आदमी घायल हो गए थे, कई लोगों के सर फट गए थे और सुभाष बाबू को भी पुलिस पकड़कर लाल बाजार ले गई थी।

5. डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख करने के साथ-साथ उनकी फोटो भी उतरवा रहे थे, ताकि उनकी फोटो को अखबार में व पर्चों पर छपवाकर पूरे देश में फैला सकें और अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे जुल्म के बारे में सबको बता सके। वे सबको यह भी बताना चाहते थे कि कोलकाता में भी स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए काम हो रहा है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

उत्तर:- सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जगह-जगह स्त्रियां जुलूस निकाल रही थी और निर्धारित स्थान पर पहुंचने का प्रयास कर रही थी। मोनुमेंट के पास जब पुलिस सुभाष बाबू को गिरफ्तार करके लालबाजार ले गई और वहां मौजूद लोगों पर लाठियां बरसाने लगी, तब स्त्रियां मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की घोषणा पढ़ रही थी। पुलिस ने उनके ऊपर भी लाठियां बरसाई, लेकिन फिर भी वे पीछे नहीं हटी और पहली बार इतनी भारी संख्या में स्त्रियों की गिरफ्तारी हुई।

2. जुलूस के लालबाजार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

उत्तर:- जुलूस के लाल बाजार आने पर पुलिस ने बेकाबू हो रही भीड़ पर लाठियां बरसाना शुरू कर दिया, जिसकी वजह से बहुत से लोग घायल हो गए और बहुत से लोगों के सिर फट गए। पुलिस ने लोगों को गिरफ्तार करना शुरू कर दिया और बहुत-सी स्त्रियों की भी गिरफ्तारी हुई। इस सब के बावजूद भी लोग पूरे जोश और जुनून के साथ आगे बढ़ते जा रहे थे। धर्म तले के मोड़ पर आकर जुलूस टूट गया और 50-60 स्त्रियां वही मोड़ पर बैठ गई। पुलिस लगातार लोगों पर लाठियां बरसाई जा रही थी और स्त्रियों का एक समूह मोनुमेंट पर झंडा फहरा रहा था व घोषणा पढ़ रहा था।

3. 'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में अंग्रेजी सरकार द्वारा लागू किए गए, सभा नहीं करने व जुलूस नहीं निकालने वाले कानून को भंग करने की बात की गई है। प्रस्तुत पाठ में भारतीयों द्वारा किए गए स्वतंत्रता आंदोलन के तहत तोड़े गए कानूनों का वर्णन किया गया है। हमारे अनुसार यह बिल्कुल सही था क्योंकि अंग्रेजी सरकार भारतीयों पर हुकूमत चला रही थी और उन पर जुल्म कर रही थी; जोकि सरासर गलत है। अंग्रेजों ने संपूर्ण भारतवासियों को अपना गुलाम बना रखा था और इसीलिए भारतीयों ने अपनी स्वतंत्रता व स्वाधीनता के लिए आवाज उठाई थी।

4. बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर:- हमारे अनुसार यह दिन अपूर्व इसलिए था क्योंकि इससे पहले कलकत्ता में इतने बड़े पैमाने पर जुलूस नहीं निकाला गया था। ना ही कभी किसी ने इस प्रकार सरकार को खुली चुनौती दी गई थी। पहले कभी भी कोलकाता को इतना नहीं सजाया गया था। हर मकान व इमारत पर भारत के झंडे को फहराया गया था। जगह-जगह झंडारोहण हो रहा था और पुरे कलकत्तावासी

उत्साह और नवीनता से भरपूर थे। लोगों व स्त्रियों का इतनी बड़ी संख्या में जुलूस में भाग लेना और अपनी गिरफ्तारी देना अपने-आप में ही अनूठा था।

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

1. आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने 26 जनवरी 1931 को जो हुआ उसे अपूर्व इसलिए बताया है क्योंकि इस दिन पुलिस ने जनसभाओं और झंडारोहण को गैरकानूनी घोषित कर दिया था, लेकिन फिर भी लोगों ने बहुत बड़े पैमाने पर जुलूस में भाग लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाया। पूरे कलकत्ता में ऐसी सजावट हुई थी, जैसी पहले कभी नहीं हुई। इस आंदोलन में करीब 160 लोग घायल हुए थे और 105 महिलाएं गिरफ्तार हुई थी। कलकत्ता में इससे पहले कोई बड़ा आंदोलन नहीं हुआ था, इसलिए इस आंदोलन ने कलकत्ता पर लगे कलंक को धो दिया था।

2. खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले कहीं नहीं की गई थी।

उत्तर:- 26 जनवरी 1931 को 1 वर्ष पूर्व मनाए गए स्वतंत्रता दिवस की पुनरावृति होने वाली थी और लोग इसे बहुत बड़े पैमाने पर जुलूस निकालकर मनाने वाले थे; इसलिए पुलिस कमिश्नर ने पहले ही नोटिस निकाल दिया कि कोई भी सभा नहीं की जाएगी। इसी के तुरंत बाद कौंसिल ने नोटिस निकाला कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर मोनूमेंट पर झंडारोहण होगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ली जाएगी। यह नोटिस अंग्रेजी सरकार के लिए खुली चुनौती था।

भाषा-अध्ययन

1. रचना की दृष्टि से वाक्य तीन प्रकार होते हैं –

सरल वाक्य – सरल वाक्य में कर्ता, कर्म, पूरक, क्रिया और क्रिया विशेषण घटकों या इनमें से कुछ घटकों का योग होता है। स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य ही सरल वाक्य है।

उदाहरण – लोग टोलियाँ बनाकर मैदान में घूमने लगे।

संयुक्त वाक्य – जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र या मुख्य उपवाक्य समानाधिकरण योजक से जुड़े हों, वह संयुक्त वाक्य कहलाता है।

योजक शब्द – और, परंतु, इसलिए आदि।

उदाहरण – मोनूमेंट के नीचे झंडा फहराया जाएगा और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

मिश्र वाक्य – वह वाक्य जिसमें एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों, मिश्र वाक्य कहलाता है।

उदाहरण – जब अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तब पुलिस ने उनको पकड लिया?

निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए।

(क) दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार गया और वहाँ पर गिरफ्तार हो गया।

(ख) मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे।

(ग) सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया।

उत्तर:-

(क) दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार जाकर गिरफ्तार हो गया।

(ख) मैदान में जमा हज़ारों आदमियों की भीड़, टोलियाँ बना-बनाकर घूमने लगी।

(ग) सुभाष बाबू को पकड़कर, गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया।

2. 'बड़े भाई साहब' पाठ में से भी दो-दो सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छाँटकर लिखिए।

उत्तर:-

(क). सरल वाक्य –

वे स्वभाव से अध्ययनशील थे।

इतिहास में रावण का हाल तो पढ़ा ही होगा।

(ख). संयुक्त वाक्य –

फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है।

उनकी नज़र मेरी ओर उठी और प्राण निकल गए।

(ग). मिश्र वाक्य –

मुझे कुछ ऐसी धारणा हुई कि मैं पास हो जाऊँगा।

उन्होंने भी उसी उम्र में पढ़ना शुरू किया था, जब मैंने शुरू किया।

3. नीचे दिए गए शब्दों की संरचना पर ध्यान दीजिए –

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

'विद्या' शब्द का अंतिम स्वर 'आ' और दूसरे शब्द 'अर्थी' की प्रथम स्वर ध्वनि 'अ' जब मिलते हैं तो वे मिलकर दीर्घ स्वर 'आ' में बदल जाते हैं। यह स्वर संधि है जो संधि का ही एक प्रकार है।

संधि शब्द का अर्थ है – जोड़ना। जब दो शब्द पास-पास आते हैं तो पहले शब्द की अंतिम ध्वनि बाद में आने वाले शब्द की पहली ध्वनि से मिलकर उसे प्रभावित करती है। ध्वनि परिवर्तन की इस प्रक्रिया को संधि कहते हैं। संधि तीन प्रकार की होती है – स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि। जब संधि युक्त पदों को अलग- अलग किया जाता है तो उसे संधि विच्छेद कहते हैं; जैसे – विद्यालय – विद्या +आलय

नीचे दिए गए शब्दों की संधि कीजिए –

(क). श्रद्धा + आनंद

(ख). प्रति + एक

(ग). पुरुष + उत्तम

(घ). झंडा + उत्सव

(ड़). पुन: + आवृत्ति

(च). ज्योति: + मय

उत्तर:-

(क). श्रद्धा + आनंद = श्रद्धानंद

(ख). प्रति + एक = प्रत्येक

(ग). पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम

(घ). झंडा + उत्सव = झंडोत्सव

(ड़). पुन: + आवृत्ति = पुनरावृत्ति

(च). ज्योति: + मय = ज्योतिर्मय

तताांरा-वामीरो कथा

गद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. तताँरा-वामीरो कहाँ की कथा है?

उत्तर:- तताांरा-वामीरो लिटिल अंदमान और कार-निकोबार, द्वीप समूहों के विभक्त होने की लोककथा है।

2. वामीरो अपना गाना क्यों भूल गई?

उत्तर:- अचानक एक ऊंची लहर उठी और उसने वामीरो को भिगो दिया; जिसकी वजह से वह हड़बड़ाहट में गाना भूल गई।

3. तताँरा ने वामीरो से क्या याचना की?

उत्तर:- तताांरा ने वामीरो से अगले दिन उसी चट्टान पर आने की याचना की।

4. तताँरा और वामीरो के गाँव की क्या रीति थी?

उत्तर:- तताांरा और वामीरो के गांव की रीति के अनुसार वैवाहिक संबंध बनाने के लिए लड़के और लड़की, दोनों का एक ही गांव का होना आवश्यक था।

5. क्रोध में तताँरा ने क्या किया?

उत्तर:- तताांरा ने अपने क्रोध का शमन करने के लिए अपनी लकड़ी की तलवार निकालकर पूरी शक्ति से उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचकर धरती को दो टुकड़ों में विभाजित कर दिया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था?

उत्तर:- तताांरा के पास एक लकड़ी की तलवार के बारे में लोगों का मानना था कि लकड़ी की होने के बावजूद भी उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्तियां है। तताांरा उसे कभी भी दूसरों के सामने उपयोग नहीं करता था, किंतु उसके साहसिक कारनामें बेहद चर्चित थे। तताांरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

2. वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया?

उत्तर:- जब वामीरो ने हड़बड़ाकर अपना गीत बंद कर दिया, तब तताांरा ने उससे अपना गीत पूरा करने की याचना की। इस पर वामीरो ने उसे बेरुखी के साथ जवाब दिया कि पहले वह बताएं कि वह कौन है जो उसे इस तरह घूर रहा है और ऐसा असंगत प्रश्न पूछ रहा है; एवं वह अपने गांव के अलावा किसी और गांव के युवक के प्रश्न का उत्तर देने को बाध्य नहीं है।

3. तताँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु से निकोबार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर:- तताांरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु के बाद वहां के लोगों में यह सुखद परिवर्तन आया कि अब निकोबारी दूसरे गांवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे हैं।

4. निकोबार के लोग तताँरा को क्यों पसंद करते थे?

उत्तर:- तताांरा बहुत ही नेक और मददगार था। वह सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता था। वह अपने गांव वालों के साथ-साथ समूचे व्दीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। उसके इस त्याग की वजह से वह बहुत चर्चित था और सब भी उसका आदर करते थे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का क्या विश्वास है?

उत्तर:- निकोबार द्वीपसमूह के विभक्त होने के बारे में निकोबारियों का विश्वास है कि पहले ये दोनों द्वीप एक ही थे, जहां एक गांव में तताँरा नामक युवक और दूसरे गांव में वामीरो नामक युवती रहते थे। यह दोनों एक दूसरे से बेहद प्रेम करते थे लेकिन वहां की परंपरा के अनुसार उनके बीच वैवाहिक संबंध संभव नहीं था। इस कारण उनकी प्रेम कहानी का एक दुखद घटना के साथ अंत हो गया और वह व्दीप भी दो अलग-अलग हिस्सों में बंट गया। उनकी इस प्रेम कहानी ने वहां के लोगों की सोच और वहां की रूढ़िवादी परंपराओं को भी बदल दिया।

2. तताँरा खूब परिश्रम करने के बाद कहाँ गया? वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर:- ततांरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद संध्या के समय समुद्र किनारे टहलने निकलता है। समुद्र किनारे ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। सभी पक्षी अपने-अपने घोंसलों को लौट रहे थे और उनकी चहचहाहट धीरे-धीरे शांत हो रही थी, आसमान में डूबते हुए सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणें बहुत मनमोहक लग रही थी। समुद्र तट का ऐसा अद्भुत और सुंदर नज़ारा ततांरा के मन को धीरे-धीरे शांत कर रहा था।

3. वामीरो से मिलने के बाद तताँरा के जीवन में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर:- वामीरो से मिलने के बाद ततांरा के गंभीर, शांत और सुखी जीवन में बेचैनी और छटपटाहट ने जगह बना ली थी, इससे वह अचंभित था, साथ ही रोमांचित भी था। वह वामीरो को देखते ही सम्मोहित और हो गया। उसका ह्रदय वामीरो से मिलने के लिए व्यथित था। उसके लिए वामीरो के बिना एक पल भी गुजारना मुश्किल हो गया था। वह हर वक्त वामीरो के बारे में ही सोचता रहता था और शाम होने की प्रतीक्षा करता रहता था। रोज़ शाम होने से पहले ही वह उस चट्टान पर जा बैठता था और वामीरो के आने की प्रतीक्षा किया करता था।

4. प्राचीन काल में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए किस प्रकार के आयोजन किए जाते थे?

उत्तर:- प्राचीन समय में मनोरंजन और शक्ति-प्रदर्शन के लिए विभिन्न मेलों, पशु-पर्वों, कुश्ती-प्रतियोगिताओं, संगीत-सभाओं, आदि का आयोजन किया जाता था। पशु-पर्वों में हृष्ट-पुष्ट पशुओं का प्रदर्शन किया जाता था और पुरूषों को भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए पशुओं से भिड़ाया जाता था। ऐसे आयोजनों में पूरे गांव के लोग शामिल होते थे। इनमें मनोरंजन के साथ-साथ भोजन आदि की भी पूरी व्यवस्था भी होती थी।

5. रूढियाँ जब बंधन बन बोझ बनने लगें तब उनका टूट जाना ही अच्छा है। क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- रूढ़ियां जब बंधन बन बोझ बनने लगे तब उनका टूट जाना ही अच्छा है, क्योंकि समाज में प्रचलित रीति-रिवाज और कानूनों का निर्माण मनुष्य को बांधने के लिए नहीं, बल्कि समाज को सुधारने के लिए किया जाता है। मनुष्य जीवन और समाज प्रगतिशील है, समय के साथ-साथ हर चीज में बदलाव आ रहा है, हमारा रहन-सहन बदलता जा रहा है और इन सबके साथ-साथ रूढ़ीवादी विचारधाराओं और रीति-रिवाजों में बदलाव लाना भी आवश्यक है। बंधनों में जकड़कर व्यक्ति और समाज का विकास, सुख-चैन, अभिव्यक्ति आदि रुक जाती है।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों का तात्पर्य है कि जब पशु-मेले में वामीरो की मां व सभी गांववाले ततांरा का अपमान कर रहे थे, तब तातारा अपमान को सहन नहीं पाया और बहुत असहाय महसूस कर रहा था क्योंकि रीति-रिवाजों में बंधकर वह वामीरो से वैवाहिक संबंध नहीं बना सकता था, जिसकी वजह से वामिरो रोए जा रही थी और वह उसके दु:ख को चाहकर भी कम नहीं कर

सकता था। ऐसी स्थिति में उसे और कुछ नहीं सूझा इसलिए उसने अपने क्रोध को शांत करने के लिए अपनी तलवार से जमीन को दो टुकड़ों में विभाजित कर दिया।

2. बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में ग्रामीणों की प्रतीक्षा करते हुए तातारा के बेचैन मन की स्थिति का वर्णन किया गया है। उसका मन इसी उधेड़बुन में लगा हुआ था कि वामीरो उससे मिलने आएगी या नहीं। उसे अपने मन की आशा डुबते हुए सूरज की तरह लग रही थी; जो धीरे-धीरे, जैसे-जैसे समय निकल रहा था, वैसे-वैसे सूरज की तरह डूबते जा रही थी।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित वाक्यों के सामने दिए कोष्ठक में (✓) का चिन्ह लगाकर बताएं कि वह वाक्य किस प्रकार का है –

(क) निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

(ख) तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया? (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

(ग) वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

(घ) क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम? (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

(ङ) वाह! कितना सुंदर नाम है। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक)

(च) मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। (प्रश्नवाचक, विधानवाचक, निषेधात्मक, विस्मयादिबोधक

उत्तर:-

(क). विधानवाचक

(ख). प्रश्नवाचक

(ग). विधानवाचक

(घ). प्रश्नवाचक

(ड़). विस्मयादिबोधक

(च). विधानवाचक

2. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

(क) सुध-बुध खोना

(ख) बाट जोहना

(ग) खुशी का ठिकाना न रहना

(घ) आग बबूला होना

(ङ) आवाज उठाना

उत्तर:-

(क). अपने इकलौते बेटे की दुर्घटना के बारे में जानकर उसकी मां सुध-बुध बैठी।

(ख). शाम होते ही श्यामा अपने पति की बाट जोहने लगती है।

(ग). नौकरी लगते ही उसकी और उसके घरवालों की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा।

(घ). इतना समझाने के बावजूद भी जब उसके बेटे ने गलती दोहराई, तो उसने आग बबूला होकर उसको बहुत मारा।

(ड़). हमें हमेशा अत्याचार और बुराई के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

3. नीचे दिए गए शब्दों में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग करके लिखिए-

चर्चित, साहसिक, छटपटाहट, शब्दहीन

उत्तर:-

चर्चित = चर्चा + इत

साहसिक = साहस + इक

छटपटाहट = छटपट + आहट

शब्दहीन = शब्द + हीन

4. नीचे दिए गए शब्दों में उचित उपसर्ग लगाकर शब्द बनाइए-

आकर्षक, ज्ञात, कोमल, होश, घटना।

उत्तर:-

अन + आकर्षक = अनाकर्षक

अ + ज्ञात = अज्ञात

सु + कोमल = सुकोमल

बे + होश = बेहोश

दुर् + घटना = दुर्घटना

5. वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित कीजिए –

(क) जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ। (मिश्र वाक्य)

(ख) फिर तेज कदमों से चलती हुई तताँरा के सामने आकर ठिठक गई। (संयुक्त वाक्य)

(ग) वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ दौड़ी। (सरल वाक्य)

(घ) तताँरा को देखकर वह फूटकर रोने लगी। (संयुक्त वाक्य)

(ङ) रीति के अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था। (मिश्र वाक्य)

उत्तर:-

(क). जीवन में पहली बार ऐसा हुआ कि मैं विचलित हुआ हूं।

(ख). वह फिर तेज कदमों से चलती हुई आई और ततांरा के सामने आकर ठिठक गई।

(ग). वामीरो कुछ सचेत होकर घर की तरफ दौड़ी।

(घ). उसने ततांरा को देखा और फूट-फूटकर रोने लगी।

(ङ). रीति के अनुसार यह आवश्यक था कि दोनों एक ही गांव के हों।

6. नीचे दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

भय, मधुर, सभ्य, मूक, तरल, उपस्थिति, सुखद।

उत्तर:-भय – अभय

मधुर – कर्कश

सभ्य – असभ्य

मूक – वाचाल

तरल – ठोस

उपस्थिति – अनुपस्थिति

सुखद – दुखद

7. नीचे दिए गए शब्दों के दो – दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

समुद्र, आँख, दिन, अँधेरा, मुक्त।

उत्तर:- समुद्र – सागर, समंदर। आंख – नयन, नैन।

दिन – दिवस, वार। अंधेरा – अंधकार, तम।

मुक्त – आजाद, स्वतंत्र।

8. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

किंकर्तव्यविमूढ, विह्वल, भयाकुल, याचक, आकंठ।

उत्तर:-

(क). रजत के उस पर बहुत से एहसान है, इसलिए वह उनके प्रति किंकर्तव्यविमूढ़ है।

(ख). वह अपने पिता को इस हाल में देखकर विह्वल हो गई।

(ग). इतना भयानक सपना देखकर वह भयाकुल हो उठा।

(घ). द्वार पर एक याचक खड़ा है।

(ड़). ईश्वर से उसे बहुत ही मधुर आकंठ की देन मिली है।

9. किसी तरह आँचरहित एक ठंडा और ऊबाऊ दिन गुजरने लगा ‘ वाक्य में दिन के लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया गया है? आप दिन के लिए कोई तीन विशेषण और सुझाइए।

उत्तर:- वाक्य में दिन के लिए आँचरहित, एक ठंडा और ऊबाऊ, जैसे विशेषणों का प्रयोग किया गया है।

दिन के लिए कुछ और विशेषण है –

अच्छा, बुरा, उमस भरा, लंबा, नीरस, बड़ा, आदि।

10. इस पाठ में ‘ देखना ‘ क्रिया के कई रूप आए हैं ‘ देखना ‘ के इन विभिन शब्दप्रयोगों में क्या अंतर है? वाक्यप्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-

पाठ में ‘देखना’ क्रिया के प्रयोग हुए रूप —

देखना, नज़र पड़ना, घुरना, आंखें केंद्रित करना, ताकना, निहारना।

पाठ में ‘बोलना’ क्रिया के प्रयोग हुए रूप —

बोलना, कहना, बकना, बतियाना, गप्पे मारना, वार्तालाप करना, चिल्लाना।

11. वाक्यों के रेखांकित पदबंधों का प्रकार बताइए-

(क) उसकी कल्पना में वह एक अद्‌भुत साहसी युवक था।

(ख) तताँरा को मानो कुछ होश आया।

(ग) वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता।

(घ) तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी।

(ङ) उसकी व्याकुल आँखें वामीरो को ढूँढने में व्यस्त थीं।

उत्तर:- (क). विशेषण पदबंध (ख). क्रिया पदबंध (ग). क्रिया विशेषण पदबंध

(घ). संज्ञा पदबंध (ड़). संज्ञा पदबंध

अब कहां दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

गद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. बड़े-बड़े बिल्डर समुद्र को पीछे क्यों धकेल रहे थे?

उत्तर:- बड़े-बड़े बिल्डर लगातार बढ़ती हुई आबादी की वज़ह से लोगों के रहने के लिए कम पड़ रही जगह की समस्या से निपटने के लिए समुद्र को पीछे धकेल रहे है।

2. लेखक का घर किस शहर में था?

उत्तर:- पहले लेखक का घर ग्वालियर हुआ करता था और बाद में वे बम्बई में वर्सोवा नामक स्थान में रहने लगे।

3. जीवन कैसे घरों में सिमटने लगा है?

उत्तर:- पहले बड़े-बड़े दालानों-आंगनों में लोग मिल-जुलकर रहते थे, लेकिन अब छोटे-छोटे डिब्बों जैसे घरों में जीवंत सिमट गया है।

4. कबूतर परेशानी में इधर-उधर क्यों फड़फड़ा रहे थे?

उत्तर:- कबूतरों का एक अंडा बिल्ली ने तोड़ दिया था और दूसरा अंडा लेखक की मां द्वारा गलती से टूट गया था, इसलिए कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. अरब में लशकर को नूह के नाम से क्यों याद करते हैं?

उत्तर:- बाइबिल और दूसरे पावन ग्रंथों में नूह नाम के एक पैगंबर का जिक्र किया गया है, जिनका असली नाम लश्कर था। अरब में लश्कर को नूह इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने एक बार एक जख्मी कुत्ते को दुत्कार दिया था और इसके कारण वे ताउम्र पश्चाताप में रोते रहे।

2. लेखक की माँ किस समय पेड़ों के पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थीं और क्यों?

उत्तर:- लेखक की मां सूरज ढलने के बाद आंगन के पेड़ों से पत्ते तोड़ने के लिए मना करती थी, क्योंकि उनका मानना था कि दीया-बत्ती के वक्त पेड़ों से पत्ते और फूल तोड़ने पर पेड़ों को दर्द होता है; जिसकी वजह से वे रोते है और हमें बद्दुआ देते है।

3. प्रकृति में आए असंतुलन का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर:- प्रकृति में आए असंतुलन के कारण मनुष्य को दिन प्रतिदिन बढ़ती गर्मी, बेवक्त की बरसाते, ज़लज़लों, सैलाबों, तूफ़ानों और नित नए रोगो का सामना करना पड़ रहा है। नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है और यह सभी चीजें नेचर के गुस्से का एक नमूना है, क्योंकि मनुष्य की बढ़ती हुई आबादी वातावरण का शोषण कर रही है।

4. लेखक की माँ ने पूरे दिन का रोज़ा क्यों रखा?

उत्तर:- लेखक की मां ने पूरे दिन का रोजा इसलिए रखा क्योंकि उनके हाथों कबूतरों के एक जोड़े का अंडा गिरकर टूट गया था। इसके कारण कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आंखों में दुख देखकर लेखक की मां पूरे दिन रोती रही और बार-बार नमाज पढ़कर खुदा से इस गलती को माफ करने की दुआ मांगती रही।

5. लेखक ने ग्वालियर से बंबई तक किन बदलावों को महसूस किया? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- लेखक ने ग्वालियर से मुंबई की दूरी में काफी कुछ बदलाव महसूस किया। वर्सोवा में जहां पहले दूर-दूर तक जंगल, पेड़-पौधे, परिंदे और जानवर हुआ करते थे वहां आज समंदर के किनारे लंबी चौड़ी बस्ती बन गई है। वहां बनी इमारतों और घरों ने सभी जानवरों और परिंदों से उनका आशियाना छीन लिया।

6. 'डेरा डालने' से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- 'डेरा डालने' का अर्थ होता है – अस्थाई रूप से बसना। पहले जब दूर-दूर तक जंगल हुआ करता था तब परिंदे पेड़ों पर घोसले बनाकर स्थाई रूप से बसे होते थे, लेकिन अब शहरों में बनी लंबी-चौड़ी इमारतों और घरों ने परिंदों से उनके आशियाने छीन लिए हैं; जिसकी वजह से बहुत से पक्षियों ने उन्हीं इमारतों व घरों में यहां-वहां डेरा डाल लिया है।

7. शेख अयाज़ के पिता अपने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर क्यों उठ खड़े हुए?

उत्तर:- शेख अयाश के पिता ने बाजू पर काला च्योंटा रेंगता देख भोजन छोड़ कर उठ खड़े हुए क्योंकि उनका मानना था कि उन्होंने उस च्योंटे को अपने घर से बेघर कर दिया है। इसलिए उन्होंने बिना वक्त गवाह उसे उसके घर छोड़ कर आना जरूरी समझा। यह उनका बड़प्पन था कि उन्होंने उस बेजुबान जानवर की भावनाओं को समझा।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. बढ़ती हुई आबादी का पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर:- पर्यावरण में आ रहे असंतुलन का मुख्य कारण मनुष्य की बढ़ती हुई आबादी ही है। जैसे-जैसे मनुष्यों की आबादी बढ़ती जा रही है, वैसे वैसे उनके रहने के लिए आवास की मांग बढ़ती जा रही है। इसकी वजह से पहले मनुष्य ने सारे जंगलों पर कब्जा कर लिया और अब वह समंदर की सीमाओं को भी पीछे सरकाते जा रहे है। मनुष्य ने अपने रास्ते में आने वाले सभी जंगलों को काट दिया। मनुष्य लगातार प्रकृति का शोषण कर रहा है। दिन-ब-दिन फैलते हुए प्रदूषण के कारण प्राकृतिक आपदाएँ भी बढ़ती जा रही है। इस तरह के पर्यावरण के असंतुलन का मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

2. लेखक की पत्नी को खिड़की में जाली क्यों लगवानी पड़ी?

उत्तर:- लेखक के फ्लैट की मचान में कबूतरों के एक जोड़े ने घोंसला बना रखा था। अपने बच्चों को खिलाने पर जाने की जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए वे दिन में कई बार आते-जाते रहते थे, जिससे लेखक का घर गंदा होता था। वे लेखक के घर में चीजों को गिराकर तोड़ भी देते थे और उनकी लाइब्रेरी में घुसकर किताबों को गंदा कर देते थे। रोज-रोज की इस परेशानी से तंग आकर लेखक की पत्नी ने कबूतरों से अपने घर को बचाने के लिए खिड़की पर जाली लगवाकर उसे बंद कर दिया।

3. समुद्र के गुस्से की क्या वजह थी? उसने अपना गुस्सा कैसे निकाला?

उत्तर:- बढ़ती आवासीय समस्या के कारण कई सालों से बड़े-बड़े बिल्डर समंदर को पीछे धकेलकर उसकी जमीन पर इमारतों व घरों का निर्माण कर रहे थे। पहले समंदर ने अपनी फैली हुई टांगे समेटीं, फिर थोड़ा सिमटकर बैठ गया। जब जगह और कम पड़ गई तो उकड़ुं बैठ गया, फिर खड़ा हो गया। लेकिन जब खड़े रहने की जगह भी कम पड़ गई, तो उसे गुस्सा आ गया और इसलिए उसने एक रात अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाजों को उठाकर बच्चों की गेंद की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया। इनमें से एक वर्ली के समंदर के किनारे गिरा, दूसरा बांद्रा में कार्टर रोड के सामने गिरा और तीसरा गेटवे ऑफ इंडिया पर जाकर गिरा।

4. 'मट्टी से मट्टी मिले,
खो के सभी निशान,
किसमें कितना कौन है
कैसे हो पहचान'

इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि सभी जीव-जंतुओं का निर्माण मिट्टी से ही हुआ है और आखिर में सभी को मिट्टी में ही मिल जाना है। मिट्टी में मिलने के बाद किसी को कोई पहचान बाकी नहीं रहती। इसलिए सबको मिल-जुलकर व प्रेमभाव से रहना चाहिए, क्योंकि सभी मनुष्य व जीव एक समान है। ईश्वर ने सभी को एक समान बनाया है, इसलिए हमें भी भेदभाव नहीं करना चाहिए।

निम्नलिखित के आशय सपष्ट कीजिए-

1. नेचर की सहनशक्ति की एक सीमा होती है। नेचर के गुस्से का एक नमूना कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने कहा है कि हर चीज को सहने की एक निश्चित सीमा होती है, फिर चाहे वह प्रकृति हो या इंसान। उस सीमा को लांघने के बाद इसका खामियाजा भुगतना निश्चित है। लेखक ने इसका उदाहरण देते हुए कुछ वर्षों पहले मुंबई में हुई एक घटना का वर्णन किया है, जिसमें समुद्र ने तीन जहाजों को बच्चों की गेंद की तरह फेंक दिया था।

2. जो जितना बड़ा होता है उसे उतना ही कम गुस्सा आता है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने महान व बड़े लोगों की विशेषता का वर्णन किया है और बताया है कि महान व बड़े लोग अपनी इंद्रियों पर भली-भांति काबू पा लेते हैं और दूसरों को माफ करके अपनी महानता का परिचय देते है।

3. इस बस्ती ने न जाने कितने परिंदों-चरिंदों से उनका घर छीन लिया है। इनमें से कुछ शहर छोड़कर चले गए हैं जो नहीं जा सके हैं उन्होंने यहाँ-वहाँ डेरा डाल लिया है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने मनुष्य द्वारा किए गए प्रकृति के शोषण का वर्णन किया है। बढ़ते शहरीकरण ने जंगलों को खत्म कर दिया है और पशु-पक्षियों से उनके आशियाने छीन लिए है। इसके कारण बहुत से पशु-पक्षी शहर छोड़ कर चले गए और कुछ इमारतों और घरों में ही इधर-उधर अस्थाई रूप से डेरा डाल लिया है।

4. शेख अयाज के पिता बोले, 'नहीं, यह बात नहीं है। मैंने एक घरवाले को बेघर कर दिया है। उस बेघर को कुएँ पर उसके घर छोड़ने जा रहा हूँ।' इन पंक्तियों में छिपी हुई उनकी भावना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों से पता चलता है कि शेख अयाश के पिता बहुत ही भावुक और दयालु व्यक्ति थे। यह उनकी महानता थी कि उन्होंने उस बेजुबान जानवर की भावनाओं को समझा। उनकी नजर में इंसान और पशु-पक्षी, सभी समान होते है। उन्होंने अपनी गलती स्वीकारते हुए तुरंत उसे सुधारने का प्रयास किया।

भाषा-अध्ययन

1. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों में कारक चिन्हों को पहचानकर रेखांकित कीजिए और उनके नाम रिक्त स्थानों में लिखिए;

जैसे (क) माँ ने भोजन परोसा?- कर्ता

(ख) मैं किसी के लिए मुसीबत नहीं हूँ।

(ग) मैंने एक घर वाले को बेघर कर दिया।

(घ) कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे।

(ङ) दरिया पर जाओ तो उसे सलाम किया करो।

उत्तर:-

(क). कर्ता कारक

(ख). संप्रदान कारक

(ग). संबंध कारक

(घ). अधिकरण कारक

(ड़). अधिकरण कारक

2. नीचे दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए –

चींटी, घोड़ा, आवाज, बिल, फौज, रोटी, बिंदु, दीवार, टुकड़ा।

उत्तर:-

चींटी – चींटियाँ

घोड़ा – घोड़े

आवाज – आवाज़ें

बिल – बिलों

फौज – फौजें

रोटी – रोटियाँ

बिंदु – बिन्दुओं

दीवार – दीवारें

टुकड़ा – टुकड़े

3. ध्यान दीजिए नुक्ता लगाने से शब्द के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। पाठ में 'दफा' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ होता है-बार (गणना संबंधी), कानून संबंधी। यदि इस शब्द में नुक्ता लगा दिया जाए तो शब्द बनेगा ' दफ़ा ' जिसका अर्थ होता है-दूर करना, हटाना। यहाँ नीचे कुछ नुक्तायुक्त और नुक्तारहित शब्द दिए जा रहे हैं उन्हें ध्यान से देखिए और अर्थगत अंतर को समझिए।

सजा-सज़ा, नाज-नाज़, जरा-ज़रा, तेज-तेज़

निम्नलिखित वाक्यों में उचित शब्द भरकर वाक्य पूरे कीजिए

(क) आजकल.... बहुत खराब है। (जमाना/ज़माना)

(ख) पूरे कमरे को...... दो। (सजा/सज़ा)

(ग) ...... चीनी तो देना। (जरा/ज़रा)

(घ) माँ दही.......भूल गई। (जमाना/ज़माना)

(ङ) दोषी को.......दी गई। (सजा/सज़ा)

(च) महात्मा के चेहरे पर...... था। (तेज/तेज़)

उत्तर:-

(क) आजकल ज़माना बहुत खराब है।

(ख) पूरे कमरे को सजा दो।

(ग) जरा चीनी तो देना।

(घ) माँ दही जमाना भूल गई।

(ङ) दोषी को सज़ा दी गई।

(च) महात्मा के चेहरे पर तेज था।

पतझर में टूटी पत्तियां

गद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग क्यों होता है?

उत्तर:- शुद्ध सोना और गिन्नी का सोना अलग होता है क्योंकि शुद्ध सोने में कोई मिलावट नहीं होती, वहीं गिन्नी के सोने में थोडा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है। इस कारण गिन्नी का सोना अत्यधिक चमकता है और शुद्ध सोने से ज़्यादा मजबूत भी होता है।

2. प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट किसे कहते हैं?

उत्तर:- प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट उन्हें कहा जाता है, जो शुद्ध आदर्शों में व्यवहारिकता मिला देते है।

3. पाठ के संदर्भ में शुद्ध आदर्श क्या है?

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ के सन्दर्भ में शुद्ध आदर्श वह है जिनमें व्यक्ति लाभ-हानि के बारे में न सोचकर सिर्फ अच्छे-बुरे के बारे में सोचता है। शुद्ध आदर्शों में व्यावहारिकता के लिए कोई जगह नहीं होती। जिसमें सबकी भलाई छुपी होती है और जो समाज के शाश्वत मूल्यों को बनाए रखने में सक्षम होते है, वही शुद्ध आदर्श कहलाते है।

4. लेखक ने जापानियों के दिमाग में 'स्पीड' का इंजन लगने की बात क्यों कही है?

उत्तर:- जापान के लोग अमेरिका से प्रति श्रद्धा कर रहे हैं और इस होड़ में उनका दिमाग सबसे तेज़ रफ़्तार से चलता है, इसलिए लेखक ने जापानियों के दिमाग में स्पीड का इंजन लगने की बात कही है।

5. जापानी में चाय पीने की विधि को क्या कहते हैं?

उत्तर:- जापानी में चाय पीने की विधि को "चा-नो-यू" कहते हैं जिसका अर्थ है – 'टी-सेरेमनी'।

6. जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, उस स्थान की क्या विशेषता है?

उत्तर:- जापान में जहाँ चाय पिलाई जाती है, वह स्थान पारम्परिक ढंग से सजाया हुआ और शांतिपूर्ण होता है। वहां अत्यंत गरिमापूर्ण और शांतिपूर्ण ढंग से चाय पिलाई जाती है। उस छोटी सी पर्णकुटी में एक बार में केवल तीन ही लोग बैठकर चाय पी सकते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. शुद्ध आदर्श की तुलना सोने से और व्यावहारिकता की तुलना ताँबे से क्यों की गई है?

उत्तर:- शुद्ध आदर्शों की तुलना सोने से और व्यवहारिकता की तुलना तांबे से इसलिए की गई है क्योंकि शुद्ध आदर्श सोने के समान होते हैं, जो अपने लचीलेपन के कारण ज़्यादा चल नहीं पाते; लेकिन अगर इन्हीं शुद्ध आदर्शों में थोड़ा-सा व्यवहारिकता का तांबा मिला दिया जाए तो उसकी चमक बढ़ जाती है और वह मजबूत भी बन जाता है।

2. चाजीन ने कौनसी क्रियाएँ गरिमापूर्ण ढंग से पूरी कीं?

उत्तर:- चाजीन ने मेहमानों का स्वागत करने से लेकर उसे उनके सामने रखने तक की सभी क्रियाएं बहुत ही शांतिपूर्ण और गरिमापूर्ण ढंग से पूरी की। सबसे पहले उसने प्रेमपूर्वक मेहमानों का स्वागत किया, उन्हें बैठने की जगह दिखाई, फिर चाय बनाने के लिए अंगीठी सुलगाकर शांतिपूर्वक चाय बनाई। उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जय-जयवंती के सुर गूंज रहे हों।

3. 'टी-सेरेमनी' में कितने आदमियों को प्रवेश दिया जाता था और क्यों?

उत्तर:- 'टी-सेरेमनी' में सिर्फ तीन आदमियों को प्रवेश दिया जाता था क्योंकि इस विधि में सबसे मुख्य चीज होती है शांति; और उस छोटी-सी पर्णकुटी में शांति बनाए रखने के लिए भीड़ जमा करना और बातें करना वर्जित था। वहां व्यक्ति को अपने भविष्यकाल और भूतकाल को भुलाकर कुछ समय शांति से बैठाया जाता था और दुनिया की भीड़ भाड़ से परे कुछ क्षण अपने वर्तमान को जीने का मौका दिया जाता था।

4. चाय पीने के बाद लेखक ने स्वयं में क्या परिवर्तन महसूस किया?

उत्तर:- चाय पीने के बाद लेखक ने महसूस किया कि जैसे उनके दिमाग की रफ्तार धीरे-धीरे धीमे पड़ गई है और फिर बिल्कुल बंद हो गई। उनके मन मस्तिष्क से भूतकाल और भविष्यकाल दोनों का उड़ गए थे व उनको लगा मानो वे अनंतकाल में जी रहे हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. गांधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी; उदाहरण सहित इस बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर:- गाँधीजी में नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी क्योंकि वे दूसरों को आसानी से प्रभावित कर लेते थे। वह सत्य और अहिंसा जैसे आदर्शों में विश्वास रखते थे और इन्हीं आदर्शों के बलबूते पर उन्होंने हमारे देश को आजादी दिलाई। वे अपने जीवन में व्यवहारिकता को भी महत्व देते थे, लेकिन उन्होंने कभी आदर्शों को व्यवहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं दिया बल्कि हमेशा व्यवहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाने की कोशिश की। इससे हमेशा आदर्शों का महत्व ही आगे आता रहता था।

2. आपके विचार से कौन-से ऐसे मूल्य हैं जो शाश्वत हैं? वर्तमान समय में इन मूल्यों की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- हमारे विचार से जीवन में ईमानदारी, सत्य, अहिंसा, भाईचारा, परोपकार, जैसे मूल्य शाश्वत है और वर्तमान समय में ये सभी मुल्य महत्वपूर्ण है। प्रत्येक राष्ट्र के वैभव और कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है कि उसके देशवासियों में प्रेम और भाईचारे की भावना हो, वे अपने देश, अपने काम और अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह ईमानदार हो; व एक अच्छे समाज के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि उसके सभी लोगों में परोपकार, त्याग, एकता और भाईचारे की भावना हो।

3. अपने जीवन की किसी घटना का उल्लेख कीजिए जब –

(क). शुद्ध आदर्श से आपको हानि-लाभ हुआ हो।

(ख). शुद्ध आदर्श में व्यावहारिकता का पुट देने से लाभ हुआ हो।

उत्तर:-

(क). शुद्ध आदर्शों को पालन करने के लिए मैंने एक बार अपने ही एक मित्र के द्वारा की गई चोरी के बारे में अध्यापक को बता दिया था। इसकी वजह से अध्यापक ने मेरी प्रशंसा की और मुझे इनाम भी दिया; लेकिन इसकी वजह से उस मित्र ने मेरे भी सारे राज़ खोल दिया, जिनकी वजह से मुझे बहुत अपमानित होना पड़ा था।

(ख). एक बार जब मेरा ही प्रिय मित्र परचे बनाकर परीक्षा में नकल करने वाला था, तब शुद्ध आदर्शों के बतौर मैं उसके माता-पिता को इससे अवगत करा सकता था; लेकिन इससे हमारी मित्रता पर विपरीत असर पड़ सकता था। इस कारण मैंने ऐसा न करके, उसके सारे परचे एक दिन पहले ही फेंक दिए और उसे समझाया कि उसे अच्छी तरह पढ़ाई करनी चाहिए।

4. 'शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट या ताँबे में सोना', गांधीजी के आदर्श और व्यवहार के संदर्भ में यह बात किस तरह झलकती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में लेखक ने शुद्ध सोने में ताँबे की मिलावट से शुद्ध आदर्शों में व्यवहारिकता की मिलावट को दर्शाया है। यहां शुद्ध सोना शुद्ध आदर्शों का दर्शाता है और ताँबा व्यावहारिकता का दर्शाता है। गाँधीजी का मुख्य उद्देश्य था हमारे देश को अंग्रेजों के शासन से मुक्त करवाना और इसके लिए उन्हें संपूर्ण भारतवासियों के साथ की जरूरत थी। एक अकेले या छोटे

से समूह में कुछ नहीं कर सकते थे इसलिए उन्होंने सिर्फ शुद्ध आदर्शों पर चलकर व्यवहारिकता की कीमत को पहचाना और उसे भी अपने जीवन में सही से उपयोग किया। लेकिन उन्होंने कभी भी अपने आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं दिया, बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर उठाने का प्रयास करते थे। इसलिए लोग उन्हें 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' भी कहते थे।

5. 'गिरगिट' कहानी में आपने समाज में व्याप्त अवसरानुसार अपने व्यवहार को पल-पल में बदल डालने की एक बानगी देखी। इस पाठ के अंश 'गिन्नी का सोना' के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए कि 'आदर्शवादिता' और 'व्यावहारिकता' इनमें से जीवन में किसका महत्त्व है?

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ के आधार पर हम यह कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में व्यवहारिकता के मुकाबले आदर्शवादिता अधिक महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार एक अवसरवादी व्यक्ति सदैव अपना व्यवहार अवसर अनुसार बदल लेता है, उसी प्रकार व्यवहारिकता के माध्यम से भी व्यक्ति अपनी लाभ-हानि का अनुमान लगा लेता है और उसी प्रकार व्यवहार करता है जो उसके लिए लाभकारी हो। व्यावहारिकता से व्यक्ति को हमेशा लाभ होता है, लेकिन फिर भी हमारे समाज में मौजूद शाश्वत मूल्य शुद्ध आदर्शों की ही देन है। अत: जीवन में अच्छे व उच्च आदर्शों के साथ-साथ सही व्यावहारिकता भी महत्त्वपूर्ण है।

6. लेखक के मित्र ने मानसिक रोग के क्या-क्या कारण बताए? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर:- प्रस्तुत कविता में लेखक ने बताया है कि जापानी लोग अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करने लगे है। एक महीने का काम एक दिन में पूरा करने की कोशिश करते है। उनके दिमाग की रफ्तार भी तेज ही रहती है। इस भागदौड़ भरे जीवन में उनके पास अपने स्वास्थ्य के लिए भी समय नहीं होता और ना ही वे वर्तमान समय में जी पाते है। उनका दिमाग व शरीर कंप्यूटर की तरह बहुत ही अधिक तेजी से चलता है और इस कारण अंत में उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है।

7. लेखक के अनुसार सत्य केवल वर्तमान है, उसी में जीना चाहिए। लेखक ने ऐसा क्यों कहा होगा? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में लेखक ने कहा है कि वर्तमान ही सत्य है दौर प्रत्येक व्यक्ति को उसी में जीना चाहिए। अक्सर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते हैं। इस प्रकार हम वर्तमान को छोड़कर, भूतकाल या भविष्यकाल में जीते है; जबकि असल में ये दोनों ही काल मिथ्या है। जब हम भूतकाल के अपने सुखों व दुखों के बारे में सोचते है, तब भी हम दुखी होते है क्योंकि हम गुजरे हुए कल को ना ही बदल सकते है और ना ही दोबारा जी सकते है। भविष्य की रंगीन कल्पनाएं भी हमें दुःख ही देती है, क्योंकि हम अपना वक्त सोचने में ज़ाया कर देते है और उन रंगीन सपनों को पाने के लिए कोई प्रयास नहीं कर पाते।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने कहा है कि दुनिया में मौजूद सभी शाश्र्वत मुल्य आदर्शवादी लोगों की ही देन है, क्योंकि व्यवहारिकता आत्मकेंद्रित होती है लेकिन आदर्श पुरे समाज पर केन्द्रित होते है। व्यवहारिकता से तो केवल स्वयं का भला हो सकता है लेकिन आदर्शों से पुरे समाज में मुल्यों का निर्माण होता है जिनसे सभी की भलाई होती है।

2. जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्टों' के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझ-बूझ ही आगे आने लगती है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति में लेखक ने बताया है कि जब प्रैक्टिकल आइडियलिस्टों -जैसे लोग आदर्शों में व्यवहारिकता मिलाकर जीवन जीने लगते हैं, तब धीरे-धीरे आदर्श उनके जीवन से पूरी तरह मिट जाते हैं और व्यावहारिकता उनके जीवन में पूरी तरह हावी हो जाती है।

3. हमारे जीवन की रफ़्तार बढ़ गई है। यहाँ कोई चलता नहीं बल्कि दौड़ता है। कोई बोलता नहीं, बकता है। हम जब अकेले पड़ते हैं तब अपने आपसे लगातार बड़बड़ाते रहते हैं।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने जापानियों के जीवन का वर्णन किया है। जापान के लोग अमेरिका व बाकी देशों से होड़ करने में लगे हैं और इसकी वजह से वे सामान्य जीवन न जीकर बहुत ही देश गति से दौड़ रहे हैं। इस भागदौड़ भरे जीवन में उनके पास ना अपने व अपनों के लिए समय है, ना रिश्ते-नाते और ना ही अच्छा स्वास्थ्य। इन्हीं कारणों की वजह से जापानियों में मानसिक बीमारियां बहुत आम है।

4. सभी क्रियाएँ इतनी गरिमापूर्ण ढंग से कीं कि उसकी हर भंगिमा से लगता था मानो जयजयवंती के सुर गुँज रहे हों।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति में लेखक ने उस छोटी-सी पर्णकुटी में मौजूद उस चाजीन की सभी भंगिमाओं को गरिमापूर्ण बताया है। जब वह चाजीन हर कार्य को बड़े ही शांतिपूर्ण ढंग से अंजाम दे रहा था, तब ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई बहुत ही महान कलाकार पूरी एकाग्रता से गीत गा रहा हो और हर तरफ उसका मधुर स्वर गुंजायमान हो रहा हो।

भाषा-अध्ययन

1. नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

व्यावहारिकता, आदर्श, विलक्षण, शाश्वत

उत्तर:-

(क). किताबी ज्ञान को व्यावहारिकता के साथ उपयोग करना ही उसका सही उपयोग है।

(ख). मनुष्य के जीवन में अच्छे आदर्शों का बहुत बड़ा महत्त्व होता है।

(ग). कमला विलक्षण प्रतिभा की धनी है।

(घ).मृत्यु मनुष्य-जीवन का एक शाश्वत सच है।

2. लाभ – हानि ‘ का विग्रह इस प्रकार होगा- लाभ और हानि

यहाँ द्वंद्व समास है जिसमें दोनों पद प्रधान होते हैं। दोनों पदों के बीच योजक शब्द का लोप करने के लिए योजक चिह्न लगाया जाता है। नीचे दिए गए द्वंद्व समास का विग्रह कीजिए –

माता-पिता, पाप-पुण्य, सुख-दुख, रात-दिन, अन्न-जल, घर-बाहर, देश-विदेश।

उत्तर:-

(क) माता-पिता = माता और पिता

(ख) पाप-पुण्य = पाप और पुण्य

(ग) सुख-दुःख = सुख और दुःख

(घ) रात-दिन = रात और दिन

(ङ) अन-जल = अन और जल

(च) घर-बाहर = घर और बाहर

(छ) देश-विदेश = देश और विदेश

3. नीचे दिए गए विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

सफल, विलक्षण, व्यवहारिक, सजग, आदर्शवादी, शुद्ध।

उत्तर:-

(क) सफल = सफलता

(ख) विलक्षण = विलक्षणता

(ग) व्यावहारिक = व्यावहारिकता

(घ) सजग = सजगता

(ङ) आदर्शवादी = आदर्शवाद

(च) शुद्ध = शुद्धता

4. नीचे दिए गए वाक्यों में रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए और शब्द के अर्थ को समझिए –

(क) शुद्ध सोना अलग है। (ख) बहुत रात हो गई अब हमें सोना चाहिए।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'सोना' का क्या अर्थ है? पहले वाक्य में 'सोना' का अर्थ है धातु 'स्वर्ण'। दूसरे वाक्य में 'सोना' का अर्थ है 'सोना' नामक क्रिया। अलग अलग सन्दर्भों में ये शब्द अलग अर्थ देते हैं अथवा एक शब्द के कई अर्थ होते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए – उत्तर, कर, अंक, नग।

उत्तर:-

(क). मेरे प्रश्न का उत्तर दो।

राहुल का घर वहां से उत्तर दिशा में है।

(ख). हमें समय से अपनी आय के कर का भुगतान करना चाहिए।

तुम्हें यह काम अवश्य करना चाहिए।

(ग). इम्तेहान में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए तुम्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

इस नाटक के तीन अंक है।

(घ). कमरे में दो नग किसने रखें हैं?

तुम्हारी अंगुठी का नग बहुत सुंदर और चमकीला है।

5. नीचे दिए गए वाक्यों को संयुक्त वाक्य में बदलकर लिखिए –

(क) 1.अँगीठी सुलगायी। 2.उस पर चायदानी रखी।

(ख) 1. चाय तैयार हुई। 2.उसने वह प्यालों में भरी।

(ग) 1.बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन ले आया। 2.तौलिये से बरतन साफ किए।

उत्तर:-

(क). अँगीठी सुलगायी और उस पर चायदानी रखी।

(ख). चाय तैयार हुई और उसने वह प्यालों में भरी।

(ग). बगल के कमरे से जाकर कुछ बरतन ले आया और तौलिये से बरतन साफ किए।

6. नीचे दिए गए वाक्यों से मिश्र वाक्य बनाइए –

(क)1. चाय पीने की यह एक विधि है।

जापानी में उसे चा-नो-यू कहते हैं।

(ख)1. बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था।

उसमें पानी भरा हुआ था।

(ग)1. चाय तैयार हुई।

उसने वह प्यालों में भरी।

फिर वे प्याले हमारे सामने रख दिए।

उत्तर:- (क). चाय पीने की एक विधि है, जिसे जापानी में चा-नो-यू कहते हैं।

(ख). बाहर बेढब-सा एक मिट्टी का बरतन था, जो पानी से भरा हुआ था।

(ग). जैसे ही चाय तैयार हुई, वैसे ही उसने प्यालों में भरकर हमारे सामने रख दी।

कारतूस

गद्य खंड

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

1. कर्नल कालिंज का खेमा जंगल में क्यों लगा हुआ था?

उत्तर:- कर्नल कालिंज ने वज़ीर अली को गिरफ्तार करने के लिए जंगल में क्यों लगा रखा था।

2. वज़ीर अली से सिपाही क्यों तंग आ चुके थे?

उत्तर:- वजीर अली से सिपाही इसलिए तंग आ चुके थे क्योंकि वह कई वर्षों से उसे पकड़ने का प्रयास कर रहे थे और वह हमेशा उनकी आंखों में धूल झोंककर बच निकलता था।

3. कर्नल ने सवार पर नज़र रखने के लिए क्यों कहा?

उत्तर:- कर्नल ने सवार पर नज़र रखने के लिए इसलिए कहा ताकि वे पता लगा सके कि वह कहां जा रहा है और उन्हें वजीर अली के बारे में उससे कोई जानकारी मिल सके।

4. सवार ने क्यों कहा कि वज़ीर अली की गिरफ़्तारी बहुत मुश्किल है?

उत्तर:- सवार ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वह खुद की वजीर अली था और उसे उनमें से कोई भी पहचान नहीं पाया था। साथ-ही-साथ वह बहुत ही बहादुर और निडर सिपाही था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए-

1. वज़ीर अली के अफसाने सुनकर कर्नल को रॉबिनहुड की याद क्यों आ जाती थी?

उत्तर:- वजीर अली के अफसाने शंकर कर्नल को रॉबिनहुड की याद इसलिए आ जाती थी क्योंकि वह भी वज़ीर अली के समान साहसी, जांबाज और बहादुर था। वह भी वजीर अली की तरह आंखों में धूल झोंक कर निकल जाता था और हर किसी को चकमा देने में माहिर था। वज़ीर अली भी कई सालों से अंग्रेजों को चकमा दे रहा था और तुमसे बहुत अधिक नफरत करता था।

2. सआदत अली कौन था? उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत क्यों समझा?

उत्तर:- शहादत अली आसिफ़उद्दोला का भाई था। उसने वज़ीर अली की पैदाइश को अपनी मौत इसलिए समझा क्योंकि आसिफ़उद्दोला के यहां लड़के की कोई उम्मीद नहीं थी और इसलिए आसिफ़उद्दोला के बाद शहादत अली के नवाब बनने के पूरे-पूरे आसार थे। लेकिन वजीर अली के जन्म ने उससे उसका नवाब बनने ख्वाब छीन लिया था।

3. सआदत अली को अवध के तख़्त पर बिठाने के पीछे कर्नल का क्या मकसद था?

उत्तर:- कर्नल शआदत अली के बहुत ही करीबी और विश्वासपात्र दोस्त थे। शआदत अली को ऐशो-आराम काफ़ी पसंद था, इसलिए वह खुद भी मौज-मस्ती करता था,पेसे उड़ाता था और अपने दोस्त कर्नल को भी पैसे दे देता था। शहादत अली के अवध के तख्त पर बैठने से कर्नल को भी फायदा हो रहा था। इसमें उसका असली मकसद उनके पेसे और जायदाद से ऐशो-आराम की जिंदगी पाने का था और इसी कारण उन्होंने शहादत अली को अवध के तट पर बिठाया।

4. कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली ने अपनी हिफाजत कैसे की?

उत्तर:- कंपनी के वकील का कत्ल करने के बाद वज़ीर अली आजमगढ़ की तरफ भाग गया और वहां के लोगों ने उसकी सहायता करते हुए उसे हिफाजत से घाघरा तक पहुंचा दिया। उसके बाद से वह वहां के जंगलों में भटक रहा है और सैनिकों की आंखों में धूल झोंककर हमेशा भाग निकलता है।

5. सवार के जाने के बाद कर्नल क्यों हक्का-बक्का रह गया?

उत्तर:- सवार के जाने के बाद कर्नल हक्का-बक्का इसलिए रह गया क्योंकि वह जिसे साधारण सिपाही समझ रहा था, वह स्वयं वज़ीर अली था। उसे पता था कि वे लोग उसी को पकड़ना चाहते हैं, लेकिन फिर भी वह कर्नल के खेमे में आ पहुंचा। कर्नल उसकी बहादुरी और निडरता देखकर आश्चर्यचकित हो गया।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए-

1. लेफ्टीनेंट को ऐसा क्यों लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है?

उत्तर:- लेफ्टीनेंट को लगा कि कंपनी के खिलाफ़ सारे हिंदुस्तान में एक लहर दौड़ गई है क्योंकि कर्नल ने उन्हें बताया कि वज़ीर अली के अलावा और भी कई नवाब कंपनी के खिलाफ है, जिन्होंने कंपनी के बगावत शुरू कर दी है। टीपू सुल्तान और बंगाल के नवाब का भाई शम्सुद्दौला ने भी कंपनी के खिलाफ़ ठोस कदम उठाते हुए अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे-ज़मा को हिंदुस्तान पर आक्रमण करने का न्योता दिया है।

2. वज़ीर अली ने कंपनी के वकील का कत्ल क्यों किया?

उत्तर:- वज़ीर अली को उसके नवाबी पद से हटाकर बनारस भेज दिया गया था। फिर कुछ महिनों बाद गवर्नर जनरल ने उनका तबादला कलकत्ता में कर दिया। इससे नाराज़ वज़ीर अली कंपनी के वकील के पास गया और उससे उसने इसकी शिक़ायत की; लेकिन उसने उसकी शिकायत को नजरअंदाज कर दिया और वह वज़ीर अली को ही खरी-खोटी सुनाने लगा। पहले से गुस्साया वज़ीर अली और आग-बबूला हो गया और उसने वकील का कत्ल कर दिया।

3. सवार ने कर्नल से कारतूस कैसे हासिल किए?

उत्तर:- वह घुड़सवार स्वयं वज़ीर अली ही था, लेकिन उसने बड़ी ही चतुराई से अपना वेश बदलकर कर्नल के खेमे में प्रवेश कर लिया। कर्नल को उसने अपनी बातों से प्रभावित कर लिया और उसे यह यकिन दिला दिया कि वह भी वज़ीर अली के ही पीछे पड़ा है। उसने कर्नल को बताया कि वह वज़ीर अली को पकड़वाने में उनकी सहायता करना चाहता है, लेकिन उसके पास कारतूस नहीं है। इसलिए कर्नल ने उसे कारतूस दे दिए।

4. वज़ीर अली एक जाँबाज सिपाही था, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- प्रस्तुत पाठ में हम वज़ीर अली के कई बहादुर कारनामे देख सकते है। वज़ीर अली ने निडरता से अपने ही शत्रु के खेमे में अकेले प्रवेश किया और बड़ी ही चतुराई से उनसे कारतूस प्राप्त कर लिया। उसके साथ सिर्फ कुछ गिने-चुने साथ ही थे लेकिन फिर भी वह कभी के खिलाफ खड़े रहा। कंपनी के वकील द्वारा अपमानजनक बातें सहन न करके, पकड़े जाने का जोखिम उठाते हुए भी उसकी हत्या कर देना उसकी बहादुरी और वीरता को दर्शाता है। वज़ीर अली अकेला इतनी बड़ी ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ खड़ा था और वह देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर करने के लिए तत्पर था।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

1. मुट्ठीभर आदमी और ये दमखम।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति में वज़ीर अली और उसके साथियों की प्रशंसा की गई है। वज़ीर अली के समूह में बहुत ही कम लोग थे, लेकिन सभी बहुत ही जांबाज, बहादुर, निडर और शक्तिशाली थे।

2. गर्द तो ऐसे उड़ रही है जैसे कि पूरा एक काफिला चला आ रहा हो मगर मुझे तो एक ही सवार नज़र आता है।

उत्तर:- प्रस्तुत पंक्ति के अनुसार जब वज़ीर अली कर्नल के खेमे की तरफ आ रहा था, तब दूर से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक पूरा काफिला आ रहा हो। इससे लेखक दर्शाना चाह रहा है कि वज़ीर अली जैसे वीर और बहादुर सिपाही के आने पर एक काफिले के आने जैसा प्रभाव उत्पन्न होता था।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का एक-एक पर्याय लिखिए-

खिलाफ़, पाक, उम्मीद, हासिल, कामयाब, वजीफ़ा, नफ़रत, हमला, इंतेज़ार, मुमकिन।

उत्तर:-

खिलाफ़ – विरूद्ध

पाक – पवित्र

उम्मीद – आशा

हासिल – मिलना

कामयाब – सफल

वजीफ़ा – परवरिश के लिए दी जाने वाली राशि

नफ़रत – घृणा

हमला – आक्रमण

इंतज़ार – प्रतीक्षा

मुमकिन – संभव

2. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए-

आँखों में धूल झोंकना, कूटकूट कर भरना, काम तमाम कर देना, जान बख्श देना, हक्का-बक्का रह जाना।

उत्तर:-

(क). राम ये सब ग़लत काम करके अपने मां-बाप की आंखों में धूल झोंक रहा है।

(ख). हमारे सैनिकों में देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी है।

(ग). देखते ही देखते वजीर सिंह के साथियों ने अंग्रेजों के पूरे दल का काम तमाम कर दिया।

(घ). उसकी भोली शक्ल देखकर डाकूओं ने उसकी जान बख्श दी।

(ड़). उसको इतनी बुरी बातें बोलते हुए देखकर उसके माता-पिता हक्के-बक्के रह गए।

3. कारक वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध बताता है। निम्नलिखित वाक्यों में कारकों को रेखांकित कर उनके नाम लिखिए –

(क) जंगल की ज़िंदगी बड़ी खतरनाक होती है।

(ख) कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहर दौड़ गई।

(ग) वज़ीर को उसके पद से हटा दिया गया।

(घ) फ़ौज के लिए कारतूस की आवश्यकता थी।

(ङ) सिपाही घोड़े पर सवार था।

उत्तर:-

(क). जंगल की ज़िंदगी बड़ी खतरनाक होती है। (सम्बन्ध कारक)

(ख) कंपनी के खिलाफ़ सारे हिन्दुस्तान में एक लहर दौड़ गई। (सम्बन्ध कारक, अधिकरण कारक)

(ग) वज़ीर को उसके पद से हटा दिया गया। (कर्म कारक, अपादान कारक)

(घ) फ़ौज के लिए कारतूस की आवश्यकता थी। (सम्प्रदान कारक, सम्बन्ध कारक)

(ङ) सिपाही घोड़े पर सवार था। (अधिकरण कारक)

4. क्रिया का लिंग और वचन सामान्यत: कर्ता और कर्म के लिंग और वचन के अनुसार निर्धारित होता है। वाक्य में कर्ता और कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार जब क्रिया के लिंग, वचन आदि में परिवर्तन होता है तो उसे अन्विति कहते हैं। क्रिया के लिंग, वचन में परिवर्तन तभी होता है जब कर्ता या कर्म परसर्ग रहित हों;

जैसे –

सवार कारतूस माँग रहा था? (कर्ता के कारण)

सवार ने कारतूस माँगे? (कर्म के कारण)

कर्नल ने वज़ीर अली को नहीं पहचाना? (यहाँ क्रिया कर्ता और कर्म किसी के भी कारण प्रभावित नहीं है)

अत : कर्ता और कर्म के परसर्ग सहित होने पर क्रिया कर्ता और कर्म में से किसी के भी लिंग और वचन से प्रभावित नहीं होती और वह एकवचन पुल्लिंग में ही प्रयुक्त होती है। नीचे दिए गए वाक्यों में ' ने ' लगाकर उन्हें दुबारा लिखिए –

(क) घोड़ा पानी पी रहा था।

(ख) बच्चे दशहरे का मेला देखने गए।

(ग) रॉबिनहुड गरीबों की मदद करता था।

(घ) देशभर के लोग उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

उत्तर:-

(क). घोड़े ने पानी पीया।

(ख). बच्चों ने दशहरे का मेला देखा।

(ग). राॅबिनहुड ने ग़रीबों की मदद की।

(घ). देशभर के लोगों ने उसकी प्रशंसा की।

5. निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह लगाइए –

(क) कर्नल ने कहा सिपाहियों इस पर नज़र रखो ये किस तरफ़ जा रहा है

(ख) सवार ने पूछा आपने इस मकाम पर क्यों खेमा डाला है इतने लावलश्कर की क्या ज़रूरत है

(ग) खेमे के अंदर दो व्यक्ति बैठे बातें कर रहे थे चाँदनी छिटकी हुई थी और बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे एक व्यक्ति कह रहा था दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है

उत्तर:-

(क) कर्नल ने कहा, "सिपाहियों! इस पर नज़र रखो, ये किस तरफ़ जा रहा है?"

(ख) सवार ने पूछा, "आपने इस मकाम पर क्यों खेमा डाला है? इतने लावलश्कर की क्या ज़रूरत है?"

(ग) खेमे के अंदर दो व्यक्ति बैठे बातें कर रहे थे, चाँदनी छिटकी हुई थी और बाहर सिपाही पहरा दे रहे थे। एक व्यक्ति कह रहा था, "दुश्मन कभी भी हमला कर सकता है।"